हिंदी प्रकोष्ठ की अर्धवार्षिक पत्रिका

ज्ञानधारा

शरद अंक | 2022

विज्ञानं ब्रह्म

Subhash Chandra Bose

"अपने कॉलेज जीवन की देहलीज पर खड़े होकर मुझे अनुभव हुआ, कि जीवन का कोई अर्थ और उद्देश्य है।

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस"

125वीं जयंती

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू एवं कश्मीर (भारत)

---संरक्षक---

रवींद्र कुमार सिन्हा
(माननीय कुलपति)

---संपादक---

अनिल कुमार तिवारी
(नोडल अधिकारी)

---सह-संपादक---

मिलिन्द शुक्ल
(छात्र सचिव)

क्रम

शीर्षक	पृष्ठ सं.
• नेताजी सुभाषचंद्र बोस	6
• श्री माता वैष्णो देवी विश्व-विद्यालय अभिराम है	14
• आ मेरै घर आ चिड़ीए	15
• वीर गोरा बादल	17
• आज़ादी के सिंह: बाघा जतिन	21
• वर दे वीणावादिनी वर दे	26
• मिटने का अधिकार	27
• सिंहासन बत्तीसी	29
• गणित के "वशिष्ठ"	31
• महर्षि दयानंद की गुरुभक्ति	35
• राष्ट्रीय वीणा	37
• आप कितना जानते हैं?	38
• कला कुंज	40
• खुद के साथ एक जंग करते हैं	41
• मैं कब जीना भूल गया	42

।। माँ शारदे स्तुति ।।

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमञ्जुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कजमञ्जुलास्ये
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥

अर्थः हे श्वेत कमलों से भरे हुए निर्मल आसन पर विराजने वाली, श्वेत वस्त्रों से ढके सुन्दर शरीर वाली, खिले हुए सुन्दर श्वेत कमल के समान मंजुल मुख वाली और विद्या देने वाली सरस्वती ! मैं आपको नित्य प्रणाम करता हूँ।

॥ॐ श्री वैष्णवी नमः॥

Prof. (Dr.) Ravindra Kumar Sinha
FLS (London), FAZ, FZSI, FNEE, FIFSI, FAEB, MNASc.
Vice Chancellor
Padma Shri Awardee
The Order of the Golden Ark Awardee {The Netherlands)
Recipient of the Swarna Jayanti Pururskar (NASI)
Member, Cetacean Specialist Group (IUCN)

कुलपति संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकोष्ठ की पत्रिका 'ज्ञानधारा' का शरद अंक 2022 प्रकाशित हो रहा है। यह वर्ष भारत की आज़ादी का 75वां वर्ष है। भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में जिन महान विभूतियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया उनमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस का अनुपम व अग्रणी स्थान है। उनका जन्म 23 जनवरी 1897 हुआ था। इस वर्ष हम उनके जन्म का 125वां वार्षिकोत्सव भी मना रहे हैं। इस दृष्टि से 'ज्ञानधारा' का यह अंक विशिष्ट है। इसमें आज़ादी के अमृत महोत्सव की छाप स्पष्ट है। मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय परिवार के अनेक सदस्यों ने इस पत्रिका में अपनी रचनात्मक कृतियों के माध्यम से योगदान किया है। मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ।

इस पत्रिका की संपादकीय मंडली को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके अथक प्रयास से इस अंक का संकलन और प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय का हिन्दी प्रकोष्ठ हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में इसी तरह योगदान करता रहे ऐसी मेरी सदिच्छा है।

धन्यवाद!

रवीन्द्र कुमार सिन्हा
(रवींद्र कुमार सिन्हा)
कुलपति

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

कक्रियाल, कटड़ा, संघशासित जम्मू-कश्मीर (भारत) -182320

डॉ० अनिल कुमार तिवारी
नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ

संदेश

हिन्दी प्रकोष्ठ की पत्रिका 'ज्ञानधारा' के शरद अंक 2022 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष हो रहा है। इस अंक को संकलित और संपादित करने में मिलिंद शुक्ल [बी. टेक. (एम. ई.) तृतीय वर्ष] का विशेष योगदान रहा है। मैं अपना साधुवाद प्रकट करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ।

जैसा कि किसी भाषा के साथ होता है, हिन्दी में रचनात्मक लेखन करने वालों की संख्या सदैव सीमित रही है बावजूद इसके कि भारत में 90% से अधिक लोग हिन्दी समझते और बोलते हैं। इसलिए ऐसे लोगों का विशेष आभार जिन्होंने अपनी रचना को इस अंक में प्रकाशित करने के लिए प्रेषित की। मैं आशान्वित हूँ कि वे आगे भी ऐसा करते रहेंगे।

धन्यवाद

अनिल कुमार तिवारी

आध्यात्मिक मार्ग पर दो सबसे कठिन परीक्षण हैं, सही समय की प्रतीक्षा करने का धैर्य और जो सामने आए उससे निराश ना होने का साहस।

- गुरु तेग बहादुर जी महाराज

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था । बोस के पिता का नाम 'जानकीनाथ बोस' और माता का नाम 'प्रभावती' था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वक़ील थे।सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पाँचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरदचंद्र से था।

नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेज़िडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा (इण्डियन सिविल सर्विस) की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। अँग्रेज़ी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया।

भारतीयों के साथ अल्पावस्था में अंग्रेज़ों का व्यवहार देखकर सुभाष चंद्र बोस ने अपने भाई से पूछा- "दादा कक्षा में आगे की सीटों पर हमें क्यों बैठने नहीं दिया जाता है?" बोस जो भी करते, आत्मविश्वास से करते थे। अंग्रेज़ अध्यापक बोस जी के अंक देखकर हैरान रह जाते थे। बोस जी के कक्षा में सबसे अधिक अंक लाने पर भी जब छात्रवृत्ति अंग्रेज़ बालक को मिली तो वह उखड़ गए। बोस ने मिशनरी स्कूल को छोड़ दिया। उसी समय अरविन्द ने बोस जी से कहा- "हम में से प्रत्येक भारतीय को डायनमो बनना चाहिए, जिससे कि हममें से यदि एक भी खड़ा हो जाए तो हमारे आस-पास हज़ारों व्यक्ति प्रकाशवान हो जाएँ। अरविन्द के शब्द बोस के मस्तिष्क में गूँजते थे। सुभाष सोचते- 'हम अनुगमन किसका करें?' भारतीय जब चुपचाप कष्ट सहते तो वे सोचते- 'धन्य हैं ये वीर प्रसूत। ऐसे लोगों से क्या आशा की जा सकती है?'

बोस जी अंग्रेज़ी शिक्षा को निषेधात्मक शिक्षा मानते थे। किन्तु बोस जी को उनके पिता ने समझाया- हम भारतीय अंग्रेज़ों से जब तक प्रशासनिक पद नहीं छीनेंगे, तब तक देश का भला कैसे होगा। सुभाष ने इंग्लैंड में जाकर आई. सी. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे प्रतियोगिता में उत्तीर्ण ही नहीं हुए, चतुर्थ स्थान पर रहे। नेता जी एक बहुत मेधावी छात्र थे। वे चाहते तो उच्च अधिकारी के पद पर आसीन हो सकते थे। परन्तु उनकी देश भक्ति की भावना ने उन्हें कुछ अलग करने के लिए प्रेरित किया। बोस जी ने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। सारा देश हैरान रह गया। बोस जी को समझाते हुए कहा गया- तुम जानते भी हो कि तुम लाखों भारतीयों के सरताज़ होगे? तुम्हारे हज़ारों देशवासी तुम्हें नमन करेंगे? सुभाष ने कहा-

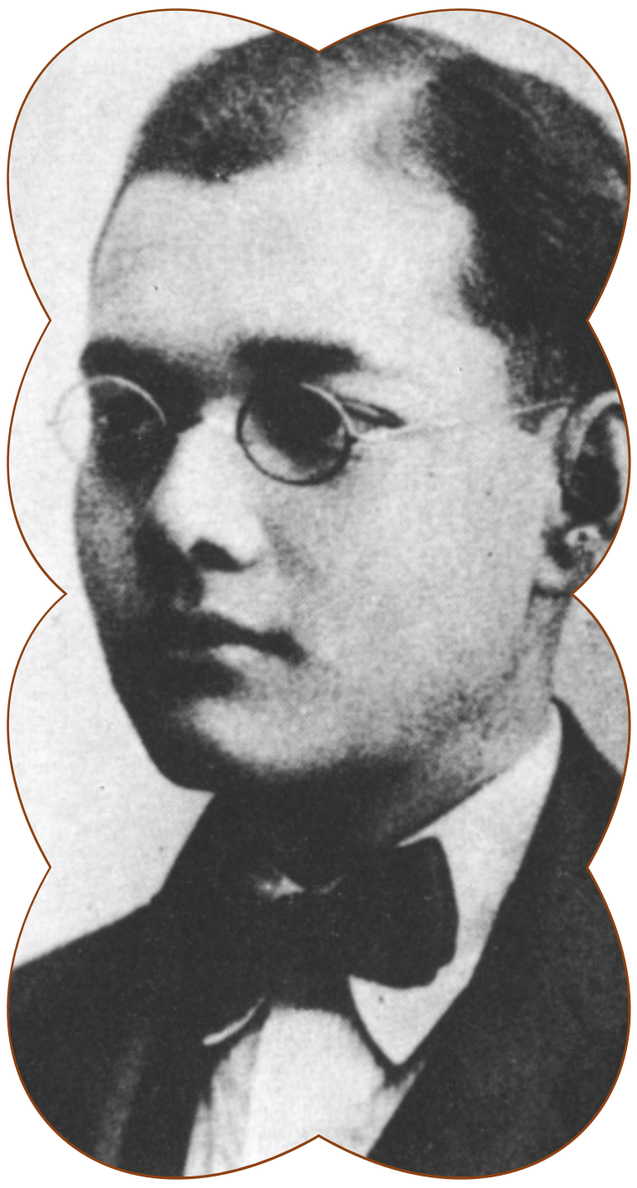

"मैं लोगों पर नहीं उनके मनों पर राज्य करना चाहता हूँ। उनका हृदय सम्राट बनना चाहता हूँ।"

बोस जी नौकरी छोड़ कर भारत आ गए। तब 23 वर्ष का नवयुवक विदेश से स्वदेशी बनकर लौटा। पूरा देश इस समय किसी नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहा था। पूरे देश को सुभाष अपने साथ ले चल पड़े। वे गाँधी जी से मिले। उनके विचार जाने, पर उनको यह बात समझ नहीं आई कि आन्दोलनकारी हँसते-हँसते लाठियाँ खा लेंगे। कब तक? वे चितरंजन दास जी के पास गए। उन्होंने सुभाष को देश को समझने और जानने को कहा। सुभाष देश भर में घूमें और निष्कर्ष निकाला:

"ग़रीब और अमीर की खाई भी समाज को बाँटे हुए है। निरक्षरता देश के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। इसके लिए संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।"

कांग्रेस के अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस ने कहा-

"मैं अंग्रेज़ों को देश से निकालना चाहता हूँ। मैं अहिंसा में विश्वास रखता हूँ किन्तु इस रास्ते पर चलकर स्वतंत्रता काफ़ी देर से मिलने की आशा है।"

क्रान्तिकारियों को बोस ने सशक्त बनने को कहा। वे चाहते थे कि अंग्रेज़ भयभीत होकर भाग खड़े हों। वे देश सेवा के काम पर लग गए। दिन देखा ना रात। उनकी सफलता देख देशबन्धु चितरंजन दास ने कहा था-

" मैं एक बात समझ गया हूँ कि तुम देश के लिए रत्न सिद्ध होगे। "

अंग्रेज़ों का दमन चक्र बढ़ता गया। बंगाल का शेर दहाड़ उठा- दमन चक्र की गति जैसे-जैसे बढ़ेगी, उसी अनुपात में हमारा आन्दोलन बढ़ेगा। यह तो एक मुक़ाबला है जिसमें जीत जनता की ही होगी। अंग्रेज़ जान गए कि जब तक सुभाष, दीनबन्धु और आज़ाद गिरफ़्तार नहीं होते, स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। अंग्रेज़ों ने कहा-

"सबसे अधिक खतरनाक व्यक्तित्व सुभाष का है। इसने पूरे बंगाल को जीवित कर दिया है।"

सुभाष चंद्र बोस एक महान् नेता थे। नेता अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करते, पर उनमें विरोधियों को साथ लेकर चलने का महान् गुण होता है। सो, नेता जी में यह गुण कूट-कूट कर भरा था। दरअसल, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अलग-अलग विचारों के दल थे। ज़ाहिर तौर पर महात्मा गाँधी को उदार विचारों वाले दल का प्रतिनिधि माना जाता था। वहीं नेताजी अपने जोशीले स्वभाव के कारण क्रांतिकारी विचारों वाले दल में थे।

गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन बीच में ही रोक देने के कारण सुभाष उनसे दुःखी हुए। कालान्तर में वे देशबन्धु चितरंजन दास के क़रीब आये तथा उनके विश्वासपात्र एवं अनन्य सहयोगी बनने का गौरव प्राप्त किया। वहीं पर सुभाष चंद्र बोस एक युवा प्रशिक्षक, पत्रकार व बंगाल कांग्रेस के स्वयंसेवक बने। 1923 ई. में चितरंजन दास द्वारा गठित स्वराज्य पार्टी का सुभाष चन्द्र बोस ने समर्थन किया। 1923 ई. में जब चितरंजन दास ने 'कलकत्ता नगर निगम' के मेयर का कार्यभार संभाला तो उन्होंने सुभाष को निगम के 'मुख्य कार्यपालिका अधिकारी' पद पर नियुक्त किया। 25 अक्टूबर, 1924 ई. को उन्हें गिरफ़्तार कर बर्मा (वर्तमान म्यांमार) की 'माण्डले' जेल में बंद कर दिया गया। सन् 1927 ई. में रिहा होने पर बोस कलकत्ता लौट आए, जहाँ चितरंजन दास की मृत्यु के बाद उन्हें अस्त-व्यस्त कांग्रेस मिली। उन्होंने कांग्रेस के उदारवादी दल की आलोचना की। 1928 ई. में प्रस्तुत 'नेहरू रिपोर्ट' के विरोध में उन्होंने एक अलग पार्टी 'इण्डिपेन्डेन्ट लीग' की स्थापना की। 1928 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 'कलकत्ता अधिवेशन' में उन्होंने 'विषय समिति' में 'नेहरू रिपोर्ट' द्वारा अनुमोदित प्रादेशिक स्वायत्ता के प्रस्ताव का डटकर विरोध किया। 1931 ई. में हुए 'गाँधी-इरविन समझौते' का भी सुभाष ने विरोध किया। सुभाष उग्र विचारों के समर्थक थे। उन्हें 'ऑल इण्डियन यूनियन कांग्रेस' एवं 'यूथ कांग्रेस' का भी अध्यक्ष बनाया गया था।

गाँधी जी कांग्रेस में फिर से सक्रिय हो गए और बोस बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष चुन लिए गए। सन् 1930 ई. में जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हुआ, बोस कारावास में थे। रिहा और फिर से गिरफ़्तार होने व अंततः एक वर्ष की नज़रबंदी के बाद उन्हें यूरोप जाने की आज्ञा दे दी गई। निर्वासन काल में, उन्होंने 'द इंडियन स्ट्रगल' और यूरोपीय नेताओं से भारत पक्ष की पैरवी की। सन् 1936 ई. में यूरोप से लौटने पर उन्हें फिर एक वर्ष के लिए गिरफ़्तार कर लिया गया। सन् 1938 ई. में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने 'राष्ट्रीय योजना आयोग' का गठन किया, जिसने औद्योगिक नीति को सूत्रबद्ध किया।यह नीति गाँधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थी, जो प्रतीक रूप में चरख़े में निष्ठा रखती थी। सन् 1939 ई. में बोस के प्रति समर्थन की अभिव्यक्ति एक गाँधीवादी प्रतिद्वंद्वी को दुबारा हुए चुनाव में हरा देने के रूप में प्रकट हुई। लेकिन गाँधी जी के विरोध के चलते इस 'विद्रोही अध्यक्ष' ने इस्तीफ़ा देने की आवश्यकता महसूस की।

अब बात उस दिन कि जब मुंबई में नेताजी सुभाषचंद्र बोस आए थे और उन्होंने स्वातंत्र्यवीर सावरकर से भेंट की। वैसे इन दोनों क्रांतिकारी नेताओं के मध्य कुल तीन भेंट हुई थीं। जिसमें से कि पहली भेंट किसी गुप्त स्थान पर हुई थी। लेकिन दूसरी भेंट 4 मार्च, 1938 को हुई। इस समय तक नेताजी सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गए थे। वे मुंबई में जब स्वातंत्र्यवीर से मिले तो उन्होंने स्वातंत्र्यवीर से कांग्रेस से जुड़ने का आग्रह किया। इस पर इन दोनों नेताओं की बृहद् चर्चा हुई।22 जून 1940 को दोनों क्रांतिकारी नेता फिर मुंबई में मिले। इसमें दोनों के मध्य जापान में रह रहे रासबिहारी बोस पर चर्चा हुई। स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने इस भेंट में रासबिहारी बोस और उनके मध्य हुए गुप्त पत्र व्यवहारों के बारे में जानकारी दी।सावरकर ने सुभाष को सुझाव दिया कि वह "कलकत्ता में होलवेल स्मारक जैसी ब्रिटिश मूर्तियों को हटाने के लिए विरोध प्रदर्शन आयोजित करने में समय बर्बाद न करें", बल्कि देश से बाहर द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश के खिलाफ खड़ी शक्तियों तक पहुंचें और प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी में बंद कैदियों कि मुक्ति करवाकर युद्ध के लिए एक भारतीय सेना का गठन करें। 25 जून 1944 को आजाद हिंद रेडियो पर प्रसारित एक प्रसारण में नेताजी ने कहा- "जब गुमराह राजनीतिक सनक और दूरदृष्टि की कमी के कारण, कांग्रेस पार्टी के लगभग सभी नेता भारतीय सेना में सैनिकों को भाड़े के सैनिकों के रूप में निंदा कर रहे हैं, परंतु यह जानकर खुशी हो रही है कि वीर सावरकर निडर होकर भारत के युवाओं को सशस्त्र बलों में भर्ती होने का आह्वान कर रहे हैं। ये सूचीबद्ध युवा स्वयं हमें हमारे आईएनए के लिए प्रशिक्षित पुरुष और सैनिक होंगे।"

सुभाष चंद्र बोस गिरफ़्तार कर लिए गए। मातृभूमि के प्रति, उसकी पुण्य वेदी पर इनका पहला पुण्य दान था। बोस ने जेल में चितरंजन दास जी से काफ़ी अनुभव प्राप्त किया।6 महीनों में ज्ञान की गंगा कितनी बही, किसी ने न देखा किन्तु जब वह जेल से बाहर आए तो तप पूत बन चुके थे। इसी समय बंगाल बाढ़ ग्रस्त हो गया। सुभाष ने निष्ठावान युवकों को संगठित किया और बचाव कार्य आरम्भ कर दिया। लोग उन्हें देखकर सारे दुःख भूल जाते थे।वे बाढ़ पीड़ितों के त्राता बन गए। सुभाष चितरंजन जी की प्रेरणा से 2 पत्र चलाने लगे। साधारण से साधारण मुद्दों से लेकर सचिवालय की गुप्त खबरों का प्रकाशन बड़ी ख़ूबी से किया। कोई भारतीय इतना दबंग हो सकता है- अंग्रेज़ हैरान थे। कुछ समय बाद उन्हें माँडले जेल ले जाया गया। सुभाष ने कहा-

> मैं इसे आज़ादी चाहने वालों का तीर्थ स्थल मानता हूँ। मेरा सौभाग्य है कि जिस स्थान को तिलक, लाला लाजपत राय, आदि क्रान्तिकारियों ने पवित्र किया, वहाँ मैं अपना शीश झुकाने आया हूँ।

नेताजी ने सारा समय स्वाध्याय में लगाया। वहाँ वर्षा, धूप, सर्दी का कोई बचाव ना था और जलवायु शिथिलता पैदा करती थी, जोड़ों के अकड़ जाने की बीमारी होती थी तथा बोर्ड लकड़ी के बने थे। अंग्रेज़ बार-बार उनको जेल भेजते रहे और रिहा करते रहे। उन्होंने एक सभा में कहा- 'यदि भारत ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ाई में भाग ले तो उसे स्वतंत्रता मिल सकती है।' उन्होंने गुप्त रूप से इसकी तैयारी शुरू कर दी। 25 जून को सिंगापुर रेडियो से उन्होंने सूचना दी कि आज़ाद हिन्द फ़ौज का निर्माण हो चुका है। अंग्रेज़ों ने उनको बन्दी बनाना चाहा, पर वे चकमा देकर निकल गए।

2 जुलाई को सिंगापुर के विशाल मैदान में भारतीयों का आह्वान किया। उन्होंने अपनी फ़ौज में महिलाओं को भी भर्ती किया। उनको बन्दूक चलाना और बम गिराना सिखाया। 21 अक्टूबर को उन्होंने प्रतिज्ञा की-

> मैं अपने देश भारत और भारतवासियों को स्वतंत्र कराने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

लोगों ने तन, मन और धन से इनका सहयोग किया। उन्होंने एक विशाल सभा में घोषणा की- तुम मुझे ख़ून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा। कतार लग गई। सबसे पहले महिलाएँ आईं। आर्थिक सहायता के लिए उन्होंने अपने सुहाग के आभूषण भी इनकी झोली में डाल दिए।

'नेताजी' के नाम से विख्यात सुभाष चन्द्र ने सशक्त क्रान्ति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर, 1943 को 'आज़ाद हिन्द सरकार' की स्थापना की तथा 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' का गठन किया। इस संगठन के प्रतीक चिह्न पर एक झंडे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता था।

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'- 4 जुलाई 1944 को रंगून (बर्मा) के जुबली हाल में आजादी के महानायक नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने इस इंकलाबी नारे की दहाड़ से भारत में अंग्रेजों के रौंगटे खड़े करके बर्तानवी हुकूमत के तख्त-ओ-ताज़ की बुनियाद को हिला कर रख दिया था। इस नारे की ललकार ने हजारों भारतीय युवाओं के जहन में देशभक्ति के जज्बात पैदा करके आजादी की जंग में एक प्रचंड ऊर्जा का संचार कर दिया था, मगर आज़ाद हिंद फौज के सुप्रीम कमांडर सुभाष चंद्र बोस ने 21 अक्तूबर 1943 को सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन भी किया था। जापान, जर्मनी, इटली सहित 11 देशों ने उस सरकार को मान्यता दी थी। इसलिए भारतीय इतिहास में 21 अक्तूबर महत्त्वपूर्ण तारीख है। सशक्त व्यक्तित्व की शख्सियत व फौलादी जिगर सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि हिंदोस्तान की सरजमीं से फिरंगी हुकूमत को रुखसत करने की कीमत केवल खून देकर ही चुकाई जा सकती है, जिसका विकल्प सशस्त्र क्रांति ही था। इन्हीं क्रांतिकारी विचारों के कारण सुभाष चंद्र बोस को भारत की आज़ादी के सबसे प्रतिष्ठित व अग्रणी योद्धा के रूप में जाना जाता है। सन् 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गठित 'आज़ाद हिंद फौज' का लक्ष्य भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के चंगुल से आज़ाद कराना था। रास बिहारी बोस, कैप्टन मोहन सिंह व निरंजन सिंह जैसे सैन्य अधिकारियों का आज़ाद हिंद सेना के गठन में अहम योगदान था। सुभाष चंद्र बोस ने 4 जुलाई 1943 को 'आज़ाद हिंद फौज' तथा 21 अक्तूबर 1943 को 'आज़ाद हिंद सरकार' दोनों संगठनों की कमान सिंगापुर में संभाली थी। आज़ाद हिंद फौज के जवानों ने 'दिल्ली चलो' का नारा देकर प्रतिज्ञा ली थी कि वे दिल्ली पहुंचकर ब्रिटिश शासन का अंत करके लाल किले पर तिरंगा फहराएंगे या वीरगति को प्राप्त होंगे।

नेता जी ने कहा था कि उन्हें मालूम नहीं कि आज़ादी की इस लड़ाई में कौन जीवित बचेगा, मगर अंत में विजय हमारी सेना की होगी। जंग-ए-आजादी में अपने लगभग 26 हजार सैनिकों का बलिदान देने वाली आज़ाद हिंद फौज में हिमाचल प्रदेश के तीन हजार से ज्यादा सैनिकों ने अहम किरदार निभाया था। 4 फरवरी 1944 को आज़ाद हिंद फौज ने मणिपुर के 'मायरंग' नामक स्थान पर अंग्रेज सेना पर भयंकर हमला बोल कर अपना आज़ादी का परचम लहरा दिया था। उस आक्रामक सैन्य अभियान को अंजाम देने वाले गुरिल्ला ब्रिगेड के कमांडर हिमाचली शूरवीर कर्नल मेहर दास थे। उन्हें उस सैन्य मिशन में अदम्य साहस के लिए 'सरदार-ए-जंग' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उसी सैन्य दल में कैप्टन बख्शी प्रताप सिंह 'तमगा-ए-शत्रुनाश' भी शामिल थे। मार्च 1944 में आज़ाद हिंद सेना ने हिंदोस्तान की सरजमीं पर दस्तक देकर अप्रैल 1944 से जून 1944 तक 'कोहिमा' (नागालैंड) के महाज़ पर अंग्रेज सेना को परास्त किया था। आजाद हिंद फौज का अपना बैंक, डाक टिकट, ध्वज, पत्रिका, आजाद हिंद रेडियो तथा अपना खुफिया तंत्र भी मौजूद था।

"हमारी विजय तब पूर्ण होगी, जब हम ब्रिटिश साम्राज्य को दिल्ली के लाल क़िले में दफना देंगे।"

सेना ने 1943 से 1945 तक अंग्रेज़ो से युद्ध किया,व ब्रितानी साम्राज्य की जड़े हिला दी तथा उन्हें भारत को स्वतंत्रता प्रदान कर देने के विषय में सोचने के लिए मजबूर किया था। सन् 1943 से 1945 तक 'आज़ाद हिन्द सेना' अंग्रेज़ों से युद्ध करती रही। अन्ततः ब्रिटिश शासन को उन्होंने महसूस करा दिया कि भारत को स्वतंत्रता देनी ही पड़ेगी।

नेताजी की मृत्यु आज भी रहस्य है,साथ ही सुर्यो के सूर्य नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सदैव प्रकाशित रहेंगे व भारत वर्ष को युगों तक प्रेरित करते रहेंगे।

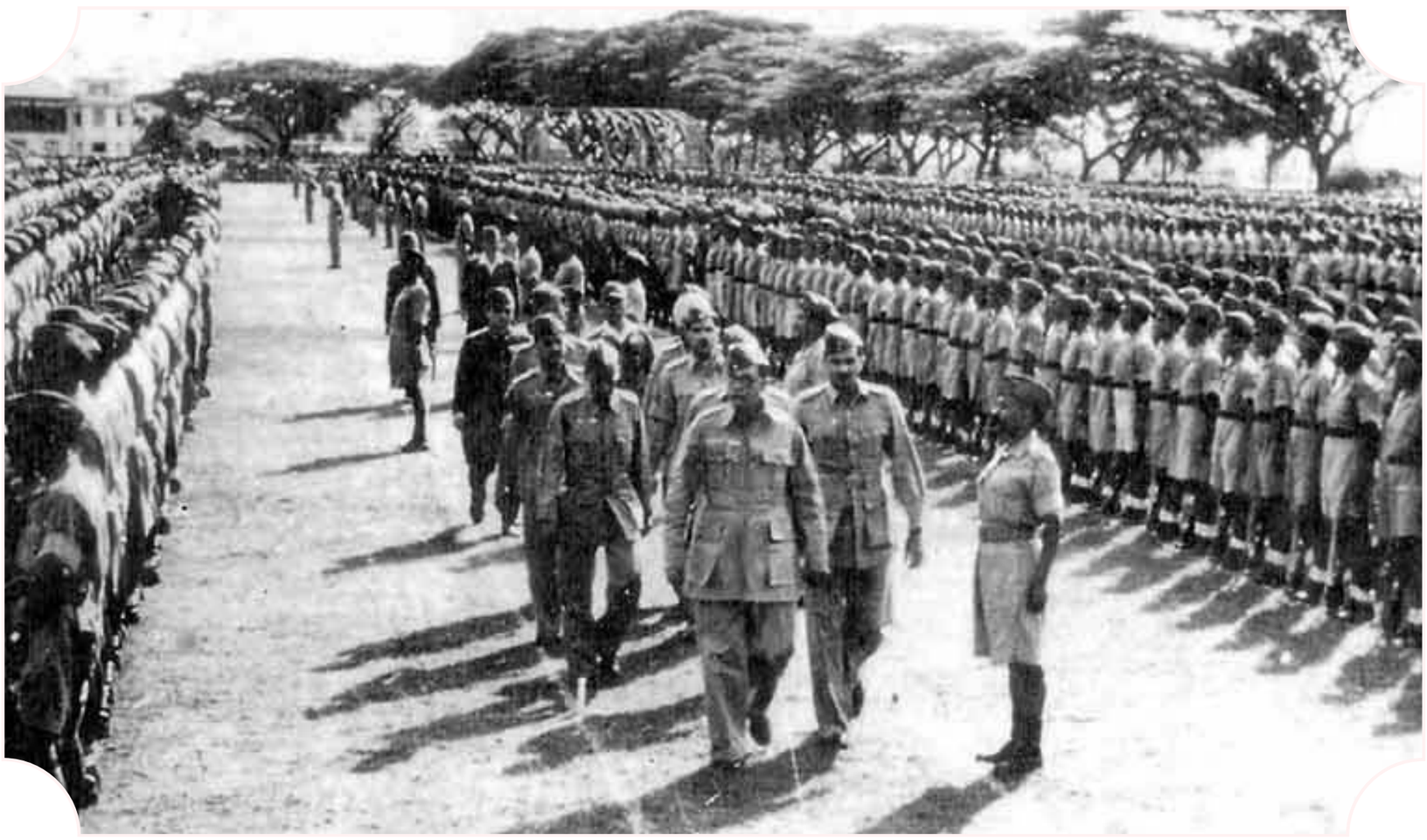

हे महानायक भारत वर्ष आपको प्रणाम करता है।

।। सुभाषितानि ।।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेंद्रता।।

भावार्थ :

जंगल में पशु शेर का संस्कार करके या उसपर पवित्र जल का छिडकाव करके उसे राजा घोषित नहीं करते बल्कि शेर अपनी क्षमताओं और योग्यता के बल पर खुद ही राजत्व स्वीकार करता है ।

श्री माता वैष्णो देवी विश्व-विद्यालय अभिराम है

- डॉ. अनिल तिवारी

भारत-मौलि शिवालिक प्रांगण, शारदा साधन धाम है।
श्री माता वैष्णो देवी विश्व-विद्यालय अभिराम है।
श्री माता वैष्णो देवी...

धवल सरोरुह वैष्णवी पोषित, रुद्राणी कर संरक्षित,
महासरस्वति वास सुवासित, ज्ञान-प्रशस्त ललाम है।
श्री माता वैष्णो देवी...

मानविकी विज्ञान प्रबन्धन, परिचर्या सह अभियंत्रण,
अप्रतिम घोष 'विज्ञानं ब्रह्म', जग सेवा संधान है ।
श्री माता वैष्णो देवी...

अनुसंधान अधिष्ठित शिक्षण, शिष्य समादर संस्कारित,
मानव-मूल्य प्रबोधित चिंतन, राष्ट्र कर्म अविराम है।
श्री माता वैष्णो देवी...

सौम्य शांत परिवेश चतुर्दिक, अनुपम उपवन कक्ष निलय,
भाषा वर्ण विचार विविध विधि, संस्कृति प्रचुर प्रकाम है।
श्री माता वैष्णो देवी...

वृत्ति बोध सम्मान प्रदायक, विमल आचरण संपादक,
जम्बुद्वीप प्रज्ञान दिवाकर, वैष्णवी का वरदान है।
श्री माता वैष्णो देवी...

आ मेरै घर आ चिड़ीए

- पद्मश्री पद्मा सचदेव

आ मेरै घर आ चिड़ीए,
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ।
फेरा स्हाड़े पा अड़ीए
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ॥

साडे बनेरे ब'म्यां चिड़ीए,
घर विच रम्यां-झम्यां चिड़ीए
तान देयी तूं सवेआं चिड़ीए
आहलना इक्क बणाय 'लड़ीए'।
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ॥

बड्डुलै उट्ठी चूं-चूं करे आं,
रहोल मेरे बेहड़े इच भरेआं।
असेंगी दिक्खी-दिक्खी ठरेआं,
स्हाड़ै इच्च समाय लड़ीए।
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ॥

उड्डुरी उड्डुरी बारो-बारी,
चिड़ा-चिड़ी जां लाड़ा-लाड़ी।
सुन्नी र'वै ना देहरी स्हाड़ी,
भाखें आहले गा लड़ीए।
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ॥

अन्दरें-बाहरें पा तूं फेरा,
कदें रफ्हेरां, कदें दफ़्हेरां फेरा,
जो ऐ मेरा, ओह सब तेरा,
सब किश गलै नै ला अड़ीए।
कदे नूंह बनीऐ, कदे धिय बनीऐ॥

“

जब हमारी गलत धारणा सही हो जाती है तो दुःख भी समाप्त हो जाता है।

”

- जगद्गुरु आदि शंकराचार्य

वीर गोरा बादल

रावल समरसिंह के बाद उनके पुत्र रत्नसिंह चितौड़ की राजगद्दी पर बैठे। रावल रत्नसिंह की रानी पद्मिनी अपूर्व सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता की ख्याति दूर दूर तक फैली थी। उसकी सुन्दरता के बारे में सुनकर दिल्ली का तत्कालीन बादशाह अलाउद्दीन खिलजी पद्मिनी को पाने के लिए लालायित हो उठा और उसने रानी को पाने हेतु चितौड़ दुर्ग पर एक विशाल सेना के साथ चढ़ाई कर दी। उसने चितौड़ के किले को कई महीनों घेरे रखा पर चितौड़ की रक्षार्थ तैनात राजपूत सैनिकों के अदम्य साहस व वीरता के चलते कई महीनों की घेरा बंदी व युद्ध के बावजूद वह चितौड़ के किले में घुस नहीं पाया। तब उसने कूटनीति से काम लेने की योजना बनाई और अपने दूत को चितौड़ रत्नसिंह के पास भेज सन्देश भेजा कि "हम तो आपसे मित्रता करना चाहते है रानी की सुन्दरता के बारे बहुत सुना है इसलिए हमें तो सिर्फ एक बार रानी का मुंह दिखा दीजिये हम घेरा उठाकर दिल्ली लौट जायेंगे। सन्देश सुनकर रत्नसिंह आगबबूला हो उठे पर रानी पद्मिनी ने इस अवसर पर दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपने पति रत्नसिंह को समझाया कि "मेरे कारण व्यर्थ ही चितौड़ के सैनिकों का रक्त बहाना बुद्धिमानी नहीं है।" रानी को अपनी नहीं पूरे मेवाड़ की चिंता थी वह नहीं चाहती थी कि उसके चलते पूरा मेवाड़ राज्य तबाह हो जाये और प्रजा को भारी दुःख उठाना पड़े क्योंकि मेवाड़ की सेना अलाउद्दीन की विशाल सेना के आगे बहुत छोटी थी। इसलिए उसने बीच का रास्ता निकालते हुए कहा कि अलाउद्दीन चाहे तो रानी का मुख आईने में देख सकता है। अलाउद्दीन भी समझ रहा था कि राजपूत वीरों को हराना बहुत कठिन काम है और बिना जीत के घेरा उठाने से उसके सैनिको का मनोबल टूट सकता है साथ ही उसकी बदनामी भी होगी इसलिए उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

चितौड़ के किले में अलाउद्दीन का स्वागत रत्नसिंह ने अतिथि की तरह किया। रानी पद्मिनी का महल सरोवर के बीचों बीच था इसलिए दीवार पर एक बड़ा आईना लगाया गया। रानी को आईने के सामने बिठाया गया। आईने से खिड़की के जरिये रानी के मुख की परछाई सरोवर के पानी में साफ़ पड़ती थी। वहीं से अलाउद्दीन को रानी का मुखारविंद दिखाया गया। सरोवर के पानी में रानी के मुख की परछाई में उसका सौन्दर्य देखकर अलाउद्दीन चकित रह गया और उसने मन ही मन रानी को पाने के लिए कुटिल चाल चलने की सोच ली। जब रत्नसिंह अलाउद्दीन को वापस जाने के लिए किले के द्वार तक छोड़ने आये तो अलाउद्दीन ने अपने सैनिकों को संकेत कर रत्नसिंह को धोखे से गिरफ्तार कर लिया।

रत्नसिंह को कैद करने के बाद अलाउद्दीन ने प्रस्ताव रखा कि रानी को उसे सौंपने के बाद ही वह रत्नसिंह को कैद मुक्त करेगा।

रानी ने भी कूटनीति का जबाब कूटनीति से देने का निश्चय किया और उसने अलाउद्दीन को सन्देश भेजा कि- "मैं मेवाड़ की महारानी अपनी सात सौ दासियों के साथ आपके सम्मुख उपस्थित होने से पूर्व अपने पति के दर्शन करना चाहूंगी। यदि आपको मेरी यह शर्त स्वीकार है तो मुझे सूचित करें। रानी का ऐसा सन्देश पाकर कामुक अलाउद्दीन के ख़ुशी का ठिकाना न रहा, और उस अदभुत सुन्दर रानी को पाने के लिए बेताब उसने तुरंत रानी की शर्त स्वीकार कर सन्देश भिजवा दिया।

उधर रानी ने अपने काका गोरा व भाई बादल के साथ रणनीति तैयार कर सात सौ डोलियाँ तैयार करवाई और इन डोलियों में हथियार बंद राजपूत वीर सैनिक बिठा दिए। डोलियों को उठाने के लिए भी कहारों के स्थान पर छांटे हुए वीर सैनिको को कहारों के वेश में लगाया गया। इस तरह पूरी तैयारी कर रानी अलाउद्दीन के शिविर में अपने पति को छुड़ाने हेतु चली। उसकी डोली के साथ गोरा व बादल जैसे युद्ध कला में निपुण वीर चल रहे थे। अलाउद्दीन व उसके सैनिक रानी के काफिले को दूर से देख रहे थे। सारी पालकियां अलाउद्दीन के शिविर के पास आकर रुकीं और उनमे से राजपूत वीर अपनी तलवारे सहित निकलकर यवन सेना पर अचानक टूट पड़े इस तरह अचानक हमले से अलाउद्दीन की सेना हक्की बक्की रह गयी और गोरा बादल ने तत्परता से रत्नसिंह को अलाउद्दीन की कैद से मुक्त कर सकुशल चितौड़ के दुर्ग में पहुंचा दिया। इस हार से अलाउद्दीन बहुत लज्जित हुआ और उसने अब चितौड़ विजय करने के लिए ठान ली। आखिर उसके छ:माह से ज्यादा चले घेरे व युद्ध के कारण किले में खाद्य सामग्री का अभाव हो गया तब राजपूत सैनिकों ने केसरिया बाना पहन कर जौहर और साका करने का निश्चय किया। जौहर के लिए गोमुख के उत्तर वाले मैदान में एक विशाल चिता का निर्माण किया गया। रानी पद्मिनी के नेतृत्व में 16,000 राजपूत रमणियों ने गोमुख में स्नान कर अपने सम्बन्धियों को अन्तिम प्रणाम कर जौहर चिता में प्रवेश किया। थोड़ी ही देर में देवदुर्लभ सौंदर्य अग्नि की लपटों में स्वाहा होकर कीर्ति कुंदन बन गया। जौहर की ज्वाला की लपटों को देखकर अलाउद्दीन खिलजी भी हतप्रभ हो गया। रावल रत्नसिंह के नेतृत्व में केसरिया बाना धारण कर 30,000 राजपूत सैनिक किले के द्वार खोल भूखे सिंहों की भांति खिलजी की सेना पर टूट पड़े। भयंकर युद्ध हुआ गोरा और उसके भतीजे बादल ने अद्भुत पराक्रम दिखाया। बादल की आयु उस वक्त सिर्फ़ बारह वर्ष की ही थी उसकी वीरता का एक गीतकार ने इस तरह वर्णन किया।

बादल बारह बरस रो, लड़ियों लाखां साथ।
सारी दुनिया पेखियो, वो खांडा वै हाथ।।

इस प्रकार छह माह और सात दिन के खूनी संघर्ष के बाद 18 अप्रैल 1303 को विजय के बाद असीम उत्सुकता के साथ खिलजी ने चित्तौड़ दुर्ग में प्रवेश किया लेकिन उसे एक भी पुरूष, स्त्री या बालक जीवित नहीं मिला जो यह बता सके कि आख़िर विजय किसकी हुई और उसकी अधीनता स्वीकार कर सके। उसके स्वागत के लिए बची तो सिर्फ़ जौहर की प्रज्वलित ज्वाला और क्षत-विक्षत लाशे और उन पर मंडराते गिद्ध और कौवे। रत्नसिंह युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए और रानी पद्मिनी राजपूत नारियों की कुल परम्परा मर्यादा और अपने कुल गौरव की रक्षार्थ जौहर की ज्वालाओं में जलकर स्वाहा हो गयी जिसकी कीर्ति गाथा आज भी अमर है और सदियों तक आने वाली पीढ़ी को गौरवपूर्ण आत्म बलिदान की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

उधर वीरवर गोरा का धड़ अरिदल काट रहा था
और इधर बादल लाशों से भूतल पाट रहा था
आगे पीछे दाएँ बाएँ जम कर लड़ी लड़ाई
उस दिन समर भूमि में लाखों बादल पड़े दिखाई

मगर हुआ परिणाम वही की जो होना था
उनको तो कण कण अरियों के शोणित में धोना था
मेवाड़ी सीमा में राणा सकुशल पहुच गए थे
गोरा बादल तिल तिल कर रण में खेत रहे थे

एक एक कर मिटे सभी मेवाड़ी वीर सिपाही
रत्न सिंह पर लेकिन रंचक आँच न आने पायी
गोरा बादल के शव पर भारत माता रोई थी
उसने अपनी दो प्यारी ज्वलंत मणियाँ खोयी थी

धन्य धरा मेवाड़ धन्य गोरा बादल बलिदानी
जिनके बल से रहा पद्मिनी का सतीत्व अभिमानी
जिसके कारन मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी
दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुर्बानी

कविता: गोरा-बादल (पं. नरेंद्र मिश्र)

चढ़ चेतक पर तलवार उठा
रखता था भूतल-पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट
करता था सफल जवानी को।

कलकल बहती थी रण-गंगा
अरि-दल को डूब नहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी
चटपट उस पार लगाने को।।

- श्याम नारायण पांडेय

आज़ादी के सिंहः बाघा जतिन

आजादी की लड़ाई का इतिहास लिखे जाने के वक्त नाइंसाफी का शिकार होने वालों में एक ऐसा क्रांतिकारी भी था, जिसका प्लान अगर कामयाब हुआ होता, साथी ने गद्दारी नहीं की होती तो देश को ना गांधी की जरूरत पड़ती और ना बोस की। देश भी 32 साल पहले ही यानी 1915 में आजाद हो गया होता। उस दौर का हीरो था वो, जब खौफ में लोग घरों में भी सहम कर रहते थे, वो अकेला जहां अंग्रेजों को देखता, उन्हें पीट देता था, जतीन्द्रनाथ मुखर्जी के बारे में यही मशहूर था।

एक बार तो एक रेलवे स्टेशन पर जतीन्द्रनाथ ने अकेले ही आठ आठ अंग्रेजों को पीट दिया था। बलिष्ठ देह के स्वामी जतीन्द्रनाथ मुखर्जी साथियों के बीच बाघा जतिन के नाम से मशहूर थे। बंगला के नादिया में पैदा हुए थे, जतिन जो अब बांग्लादेश में है। पिता की मौत के बाद मां शरतशशि ने ही अपने मायके में उनकी परवरिश की, शुरू से ही उनकी रुचि फिजिकल गेम्स में रही, स्विमिंग और हॉर्सराइडिंग के चलते वो बलिष्ठ शरीर के स्वामी बन गए।

11 साल की उम्र में ही उन्होंने शहर की गलियों में लोगों को घायल करने वाले बिगड़ैल घोड़े को काबू किया, तो लोगों ने काफी तारीफ की। उनकी मां कवि स्वभाव की थीं, और वकील मामा के क्लाइंट रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ उनके परिवार का अक्सर मिलना होता था। जतिन पर इस सबका बहुत प्रभाव पड़ा। उनके बलिष्ठ शरीर और चैरिटेबल कामों की चर्चा होने लगी। एक वृद्ध मुस्लिम महिला का घास का गट्ठर रोज उसके घर पहुंचाना, उसके साथ खाना खाना और उसको हर महीने मदद के लिए कुछ पैसा भेजना, लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया। दूसरी तरफ वो ध्रुव, प्रहलाद, हनुमान और राजा हरिश्चंद्र जैसे रोल नाटकों में करने लगे। इसी दौरान उन्होंने एक भारतीय का अपमान करने पर एक साथ चार अंग्रेजों को पीट दिया। अंग्रेज उनसे उलझने से बचने लगे।

फिर घरवालों के दवाब में जतिन ने शादी कर ली। लेकिन उनके पहले बेटे की अकाल मौत के चलते आंतरिक शांति के लिए जतिन ने भाई और बहन के साथ मिलकर हरिद्वार की यात्रा पर निकल पड़े। लौटकर आए तो पता चला कि उनके गांव में एक तेंदुए का आतंक है, तो वो उसे जंगल में ढूंढने निकल पड़े, लेकिन सामना हो गया रॉयल बंगाल टाइगर से। वो खतरनाक बाघ देखकर ही कोई सदमे से मर जाता, लेकिन जतिन ने उसको अपनी खुखरी से मार डाला। बंगाल सरकार ने एक समारोह में सम्मानित किया।

अंग्रेजी अखबारों में जमकर उनकी तारीफ हुई, लोग उन्हें बाघा जतिन के नाम से पुकारने लगे। लेकिन 1900 में ही अनुशीलन समिति की स्थापना हुई, उस वक्त क्रांतिकारियों का सबसे बड़ा संगठन। बाघा जतिन ने इसकी स्थापना में अहम भूमिका निभाई, अरविंदो घोष यानी महर्षि अरविंदो से मिलने के बाद इस काम में तेजी लाई गई। बंगाल के हर जिले में इसकी शाखा खोली गई, फिर बिहार और उड़ीसा का रुख किया गया।

इसी बीच 1905 में हुआ कलकत्ता में प्रिंस ऑफ वेल्स का दौरा हुआ, ब्रिटेन के राजकुमार। अंग्रेजों की बदतमीजियों से खार खाए बैठे जतिन ने प्रिंस के सामने ही उनको सबक सिखाने की ठानी। प्रिंस ऑफ वेल्स का स्वागत जुलूस निकल रहा था। एक गाड़ी की छत पर कुछ अंग्रेज बैठे हुए थे, और उनके जूते खिड़कियों पर लटक रहे थे, गाड़ी में बैठी महिलाओं के बिल्कुल मुंह पर। भड़क गए जतिन और उन्होंने अंग्रेजों से उतरने को कहा, लेकिन वो नहीं माने तो ऊपर चढ़ गए बाघा जतिन और एक-एक करके सबको पीट दिया। तब तक पीटा जब तक कि सारे नीचे नहीं गिर गए।

चूंकि ये घटना प्रिंस ऑफ वेल्स की आंखों के सामने घटी थी, तो अंग्रेज सैनिकों का भारतीयों के साथ ये बर्ताव उनके साथ सबने देखा। भारत सचिन मार्ले को पहले ही इस तरह की कई शिकायतें मिल चुकी थीं। बाघा जतिन की बजाय उन अंग्रेजों को ही दोषी पाया गया, लेकिन इस घटना से तीन बड़े काम हुए। अंग्रेजों के भारतीयों के व्यवहार के बारे में उनके शासकों के साथ-साथ दुनियां को भी पता चला, भारतीयों के मन से उनका खौफ निकला और बाघा जतिन के नाम के प्रति क्रांतिकारियों के मन में सम्मान और भी बढ़ गया।

इधर इस घटना के बाद जतिन ने वारीन्द्र घोष के साथ देवघर में एक बॉम्ब फैक्ट्री शुरू की, लेकिन साथ-साथ जतिन विवेकानंद के प्रभाव में गरीबों के लिए, भारतीय सैनिकों के लिए महामारी या कुम्भ जैसे बड़े आयोजनों के वक्त मेडिकल कैम्प्स चलाने जैसे कई सोशल कामों में भी लगे रहे। हालांकि उस दौर के अंग्रेज लेखकों के मुताबिक इस सोशल कामों के जरिए वो नये क्रांतिकारियों की भर्ती करने और अलग-अलग इलाकों में अपने क्रांतिकारी संगठनों की मीटिंग करने के लिए इस्तेमाल कर रहे थे।

तीन साल के लिए उनको दार्जीलिंग भेजा गया, जहां उन्होंने अनुशीलन समिति की एक शाखा बांधव समिति शुरू की। लेकिन एक दिन सिलीगुड़ी स्टेशन पर फिर अंग्रेजों के एक मिलिट्री ग्रुप से उनकी भिड़ंत हो गई। कैप्टन मर्फी की अगुवाई में अंग्रेजों ने जतिन से बदतमीजी की, तो जतिन ने अकेले उन आठों को जमकर मारा।

इंगलिश न्यूज पेपर्स में उनका मजाक बनाया गया, कि अकेले भारतीय ने आठ अंग्रेज मिलिट्री ऑफीसर्स को जमकर पीटा। मजिस्ट्रेट ने भी उन अफसरों से कहा कि केस वापस ले लो, जतिन ने खेद जता दिया, लेकिन इस चेतावनी के साथ कि अगर मेरे देश के लोंगों के साथ ऐसा होगा तो मैं भी ऐसे ही करूंगा। बाद में जतिन से उसने पूछा भी कि तुम कितने लोगों को एक साथ पीट सकते हो? तो जतिन का जवाब था, ईमानदार हो तो एक भी नहीं, बेईमानों की गिनती नहीं।

अलीपुर बॉम्ब केस में ज्यादातर बड़े क्रांतिकारी नेता फंस गए, ऐसे में सारी जिम्मेदारी सिर पर आ गई बाघा जतिन के। ऐसे में उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियां जारी रखने के लिए एक सीक्रेट संस्थाएं खड़ी की, जुगांतर पार्टी की भी कमान संभाली।

अंग्रेज अधिकारी हमेशा ही बाघा जतिन से बचने की कोशिश करते और उन्हें फंसाने के षड्यंत्र रचते रहते थे। साल 1908 में, बंगाल में कई क्रांतिकारियों को मुजफ्फरपुर में अलीपुर बम प्रकरण में आरोपित किया गया, पर फिर भी जतिन्द्रनाथ मुखर्जी आज़ाद थे। उन्होंने गुप्त रूप से देशभर के क्रांतिकारियों को जोड़ना शुरू किया।

बाघा जतिन ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश भर में विभिन्न शहरों में क्रांतिकारियों की विभिन्न शाखाओं के बीच मजबूत संपर्क स्थापित किया। यह वह समय था जब वरिष्ठ नेताओं के सलाखों के पीछे जाने के बाद अंग्रेजों के खिलाफ़ बंगाल क्रांति के नए नेता के रूप में उभरे थे बाघा जतिन। बंगाल में उग्रवादी क्रांतिकारी नीति शुरू करने का श्रेय भी बाघा जतिन को जाता है।

उन्हें 27 जनवरी,1910 को गिरफ्तार किया गया था, हालांकि उनके खिलाफ़ कोई ठोस प्रमाण न मिलने के कारण उन्हें कुछ दिनों के बाद छोड़ दिया गया।

जेल से अपनी रिहाई के बाद, बाघा जतिन ने राजनीतिक विचारों और विचारधाराओं के एक नए युग की शुरूआत की। उनकी भूमिका इतनी प्रभावशाली रही कि क्रांतिकारी रास बिहारी बोस ने बनारस से कलकत्ता स्थानांतरित होकर जतिन्द्रनाथ मुखर्जी के नेतृत्व में काम करना शुरू कर दिया था।

उस वक्त कोलकाता अंग्रेजों की राजधानी थी। लेकिन अंग्रेज सरकार बाघा जतिन और उनके क्रांतिकारी दल से तंग आ गई थी, उन्हें अब कोलकाता सुरक्षित नहीं लग रहा था। अंग्रेजों ने अगर अपनी राजधानी 1912 में कोलकाता से बदलकर दिल्ली बनाई तो इसकी बड़ी वजह ये क्रांतिकारी ही थे, उनमें शायद सबसे बड़ा नाम बाघा जतिन का था।

1914 में प्रथम विश्व युद्ध के बाद, उनकी जुगांतर पार्टी ने बर्लिन समिति और जर्मनी में भारतीय स्वतंत्रता पार्टी के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीयों को अंग्रेजो के जर्मनी का समर्थन भी बाघा जतिन के नेतृत्व के चलते ही मिला था।हालांकि पार्टी और उनकी गतिविधियों पर ब्रिटिश पुलिस की नज़र थी और इस वजह से, बाघा जतिन को अप्रैल 1915 में उड़ीसा में बालासोर जाना पड़ा।

यहाँ रहने के लिए उन्होंने उड़ीसा तट चुना क्योंकि यहाँ पर जर्मन हथियार पहुँचाना आसान था। उन्होंने हथियार इकट्ठा कर अंग्रेजों के खिलाफ़ जंग छेड़ने की योजना बनाई थी।

लेकिन इस योजना का खुलासा एक एजेंट ने ब्रिटिश सरकार के सामने कर दिया। इसके बाद ब्रिटिश पुलिस चौकन्नी हो गयी थी।

जैसे ही जर्मनी के साथ जतिन की भागीदारी के बारे में ब्रिटिश अधिकारियों को पता चला, उन्होंने तत्काल कार्यवाही से गंगा के डेल्टा क्षेत्रों, उड़ीसा के चटगांव और नोआखाली तटीय क्षेत्रों को सील कर दिया। पुलिस खुफिया विभाग की एक इकाई को बालासोर में जतिन्द्रनाथ मुखर्जी के ठिकाने की खोज करने के लिए भेजा गया।

बाघा जतिन को अंग्रेजों द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में पता चला और उन्होंने अपने छिपने का स्थान छोड़ दिया। उड़ीसा के जंगलों और पहाड़ियों में चलने के दो दिनों के बाद वे बालासोर रेलवे स्टेशन तक पहुँचे। लेकिन अब न केवल ब्रिटिश बल्कि वहां के गाँववालों को भी बाघा जतिन और उनके साथियों की तलाश थी क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने 'पाँच डाकुओं' के बारे में जानकारी देने वाले को इनाम देने की घोषणा की थी।

9 सितंबर 1915 को जतिन्द्रनाथ मुखर्जी और उनके साथियों ने बालासोर में चाशाखंड क्षेत्र में एक पहाड़ी पर बारिश से बचने के लिए आश्रय लिया। हालांकि, चित्ताप्रिया और अन्य साथियों ने बाघा जतिन से आग्रह किया कि वे वहां से निकल जाएँ। लेकिन जतिन ने अपने दोस्तों को खतरे में अकेला छोड़कर जाने से इनकार कर दिया।

इन पाँच क्रांतिकारियों और ब्रिटिश पुलिस के बीच 75 मिनट चली मुठभेड़ में अनगिनत ब्रिटिश घायल हुए तो क्रांतिकारियों में चित्ताप्रिया रे चौधरी की मृत्यु हो गई। जतिन और जतिश गंभीर रूप से घायल हो गए थे और जब गोला बारूद ख़त्म हो गया तो मनोरंजन सेनगुप्ता और निरेन पकड़े गए।

बाघा जतिन को बालासोर अस्पताल ले जाया गया जहां उन्होंने 10 सितंबर, 1915 को अपनी अंतिम सांस ली। लोग मानते हैं कि यदि बाघा जतिन की योजना सफ़ल हो गयी होती तो भारत 1915 में ही स्वतंत्र हो जाता।बाघा जतिन भारत के वो महान सपूत थे जो युगों में कभी कभार जन्म लेते हैं व सूर्य के समान तेज फैला कर जाते हैं।

“

न्याय मेरा धर्म है

- महाराज हरि सिंह

”

वर दे, वीणावादिनि वर दे

• सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वर दे, वीणावादिनि वर दे ।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे ।
वीणावादिनि वर दे ॥

काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे ।
वर दे, वीणावादिनि वर दे ॥

नव गति, नव लय, ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को,
नव पर नव स्वर दे ।
वर दे, वीणावादिनि वर दे ॥

वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे ।
वीणावादिनि वर दे ॥

मिटने का अधिकार

• महादेवी वर्मा

वे मुस्काते फूल, नहीं
जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना!

वे सूने से नयन,नहीं
जिनमें बनते आँसू मोती,
वह प्राणों की सेज,नही
जिसमें बेसुध पीड़ा, सोती!

वे नीलम के मेघ, नहीं
जिनको है घुल जाने की चाह
वह अनन्त रितुराज,नहीं
जिसने देखी जाने की राह!

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं,नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद!

क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरे मिटने का अधिकार!

यदि तुम असहाय और कमजोरों पर तलवार उठाते हो तो एक दिन ईश्वर भी आपके ऊपर अपनी तलवार चलायेगा।

- गुरु गोविंद सिंह

सिंहासन बत्तीसी

सप्तम कथा

एक दिन सम्राट विक्रमादित्य अपने शयन-कक्ष में सो रहे थे। अचानक उनकी नींद करुण-क्रन्दन सुनकर टूट गई। उन्होंने ध्यान लगाकर सुना तो रोने की आवाज नदी की तरफ से आ रही थी और कोई स्त्री रोए जा रही थी। विक्रम की समझ में नहीं आया कि कौन सा दुख उनके राज्य में किसी स्त्री को इतनी रात गए बिलख-बिलख कर रोने को विवश कर रहा है। उन्होंने तुरन्त राजपरिधान पहना और कमर में तलवार लटका कर आवाज़ की दिशा में चल पड़े। क्षिप्रा के तट पर आकर उन्हें पता चला कि वह आवाज़ नदी के दूसरे किनारे पर बसे जंगल से आ रही है। उन्होंने तुरन्त नदी में छलांग लगा दी तथा तैरकर दूसरे किनारे पर पहुँचे। फिर चलते-चलते उस जगह पहुँचे जहाँ से रोने की आवाज़ आ रही थी। उन्होंने देखा कि झाड़ियों में बैठी एक स्त्री रो रही है।

उन्होंने उस स्त्री से रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा कि वह कई लोगों को अपनी व्यथा सुना चुकी है, मगर कोई फायदा नहीं हुआ। राजा ने उसे विश्वास दिलाया कि वे उसकी मदद करने का हर संभव प्रयत्न करेंगे। तब स्त्री ने बताया कि वह एक चोर की पत्नी है और पकड़े जाने पर नगर कोतवाल ने उसे वृक्ष पर उलटा टँगवा दिया है। राजा ने पूछा क्या वह इस फैसले से खुश नहीं है। इस पर औरत ने कहा कि उसे फैसले पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन वह अपने पति को भूखा-प्यासा लटकता नहीं देख सकती। चूँकि न्याय में इस बात की चर्चा नहीं कि वह भूखा-प्यासा रहे, इसलिए वह उसे भोजन तथा पानी देना चाहती है। विक्रम ने पूछा कि अब तक उसने ऐसा किया क्यों नहीं। इस पर औरत बोली कि उसका पति इतनी ऊँचाई पर टँगा हुआ है कि वह बगैर किसी की सहायता के उस तक नहीं पहुँच सकती और राजा के डर से कोई भी दण्डित व्यक्ति की मदद को तैयार नहीं होता। तब विक्रम ने कहा कि वह उनके साथ चल सकती है।

दरअसल वह औरत पिशाचिनी थी और वह लटकने वाला व्यक्ति उसका पति नहीं था। वह उसे राजा के कन्धे पर चढ़कर खाना चाहती थी। जब विक्रम उस पेड़ के पास आए तो वह उस व्यक्ति को चट कर गई। तृप्त होकर विक्रम को उसने मनचाही चीज़ मांगने को कहा। विक्रम ने कहा वह अन्नपूर्णा प्रदान करे जिससे उनकी प्रजा कभी भूखी नहीं रहे। इस पर वह पिशाचिनी बोली कि अन्नपूर्णा देना उसके बस में नहीं, लेकिन उसकी बहन प्रदान कर सकती है। विक्रम उसके साथ चलकर नदी किनारे आए जहाँ एक झोपड़ी थी।

पिशाचिनी के आवाज़ देने पर उसकी बहन बाहर निकली। बहन को उसने राजा का परिचय दिया और कहा कि विक्रमादित्य अन्नपूर्णा के सच्चे अधिकारी है, अतः वह उन्हें अन्नपूर्णा प्रदान करे। उसकी बहन ने सहर्ष अन्नपूर्णा उन्हें दे दी। अन्नपूर्णा लेकर विक्रम अपने महल की ओर रवाना हुए। तब तक भोर हो चुकी थी। रास्ते में एक ब्राह्मण मिला। उसने राजा से भिक्षा में भोजन माँगा। विक्रम ने अन्नपूर्णा पात्र से कहा कि ब्राह्मण को पेट भर भोजन कराए। सचमुच तरह-तरह के व्यंजन ब्राह्मण कि सामने आ गए। जब ब्राह्मण ने पेट भर खाना खा लिया तो सम्राट ने उसे दक्षिणा देना चाहा। ब्राह्मण अपनी आँखों से अन्नपूर्णा पात्र का चमत्कार देख चुका था, इसलिए उसने कहा- "अगर आप दक्षिणा देना ही चाहते है तो मुझे दक्षिणास्वरुप यह पात्र दे दें, ताकि मुझे किसी के सामने भोजन के लिए हाथ नहीं फैलाना पड़े।" विक्रम ने बेहिचक उसी क्षण उसे वह पात्र दे दिया। ब्राह्मण राजा को आशीर्वाद देकर चला गया और वे अपने महल लौट गए।

• (यह कथा सिंहासन बत्तीसी से ली गयी है।)

गणित के "वशिष्ठ"

महान गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह ने महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत को चुनौती दी थी. उनके बारे में मशहूर है कि नासा में अपोलो की लांचिंग से पहले जब 31 कंप्यूटर कुछ समय के लिए बंद हो गए तो कंप्यूटर ठीक होने पर उनका और कंप्यूटर्स का कैलकुलेशन एक जैसा ही था.

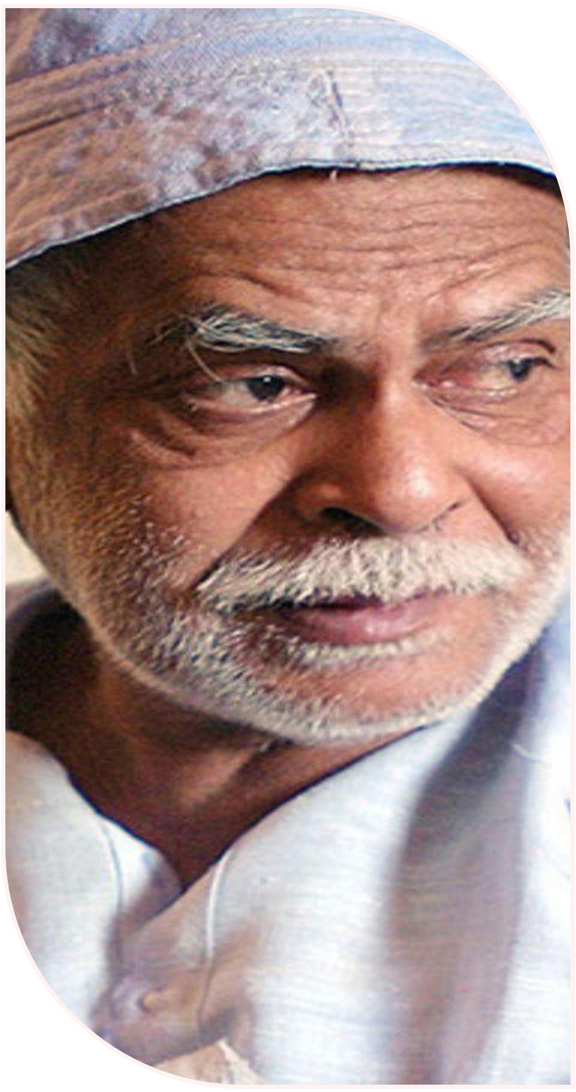

भोजपुर के एक छोटे से गुमनाम गांव आरा सदर प्रखंड के बसंतपुर में एक अति साधारण परिवार में असाधारण बच्चे ने जन्म लिया, वह साल था 1942 और महीना था अप्रैल का। कहते हैं पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं, वशिष्ठ नारायण सिंह की मेधा की चर्चा प्राथमिक स्कूल में ही होने लगी, तभी तो घर वालों ने उनका नाम नेटरहाट स्कूल में लिखवा दिया, जो उस जमाने का सर्वश्रेष्ठ आवासीय विद्यालय था। वशिष्ठ ने मैट्रिक की परीक्षा में पूरे बिहार में टॉप किया।वशिष्ठ नारायण सिंह का नामांकन पटना के साइंस कॉलेज में हुआ तो वहां के प्रोफेसर टी नारायण, उनकी प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने कहा कि यह छात्र तो B.Sc टॉप करने की क्षमता रखता है। फिर राज्यपाल से अनुरोध कर B.Sc फाइनल की परीक्षा में बैठने की विशेष अनुमति दिलाई गयी, तब वशिष्ठ पार्ट-1 के छात्र थे। कहते हैं B.Sc की परीक्षा में वशिष्ठ नारायण सिंह ने यूनिवर्सिटी में टॉप किया।

बिहार के इस होनहार की चर्चा तब अमेरिका पहुंच गयी।अमेरिका के एक प्रोफेसर केली, वशिष्ठ से मिलने पटना आए और अपने साथ उन्हें बर्कले यूनिवर्सिटी लेते गये। वहां महज तीन साल में ही वशिष्ठ नारायण ने M.Sc और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से P.hd की। यह वर्ष 1969 की बात है। उसी विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर की नौकरी करने लगे। कुछ समय नासा में भी अपनी सेवाएं दी। लेकिन जन्मभूमि की पुकार ने उनको घर आने के लिए मजबूर किया और 1971 में वे भारत लौट आए।डॉ.वशिष्ठ नारायण सिंह के मेधा की विश्वपटल पर ख्याति मिलने की एक बड़ी प्रसिद्ध और रोचक कहानी है। कहते हैं कि NASA ने अपोलो की लॉचिंग के समय 31 कंप्यूटर एक बार कुछ समय के लिए बंद हो गये। तब डॉ. वशिष्ठ भी उसी टीम में थे। उन्होंने अपना कैलकुलेशन जारी रखा। जब कंप्यूटर ठीक हुए तो उनका और कम्प्यूटर का कैलकुलेशन एक था। इस घटना ने नासा के वैज्ञानिकों को भी अचंभित कर दिया। डॉ. सिंह के बारे में प्रसिद्ध है कि उन्होंने प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन के सापेक्ष सिद्धांत को चुनौती दी थी। अमेरिका ने डॉ. सिंह को स्थायी तौर पर रहने का ऑफर दिया। कहा जाता है कि प्रोफेसर केली भी अपनी बेटी की शादी वशिष्ठ नारायण से करना चाहते थे, लेकिन बात नहीं बन सकी।

1971 में भारत आने के बाद डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह को पहले आईआईटी कानपुर और फिर आईआईटी बॉम्बे पढ़ाने का काम मिला। कुछ समय वे कोलकाता में भी रहे और नौकरी की। इस दौरान 1973 में उनकी शादी वंदना रानी सिंह से घर वालों ने करा दी। बताते हैं कि शादी के कुछ दिन बाद से ही डॉ. वशिष्ठ के व्यवहार में बदलाव दिखने लगा। जब स्थिति गंभीर हुई तो घर वालों ने इलाज शुरू कराया। उनको रांची के मानसिक आरोग्यशाला में भर्ती कराया गया। इलाज में जब काफी पैसे खर्च हुए तो बिहार सरकार ने सहयोग किया लेकिन फिर मुंह मोड लिया। एक समय ऐसा भी आया जब अस्पताल ने भुगतान न होने के चलते जबरन वशिष्ठ सिंह को डिस्चार्ड कर दिया। बिहार में जब कर्पूरी ठाकुर मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने इलाज के पैसे चुकता किये और सारे खर्च उठाने की घोषणा की।

डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह की मानसिक स्थिति जब खराब हुई तो घर वालों के पास समुचित इलाज भर पैसे नहीं थे। सरकार और उनके सहपाठियों ने कभी कभार आर्थिक सहायता दी। ऐसे ही चल रहा था कि एक दिन पुणे से इलाज कराकर लौटते वक्त वे ट्रेन से कहीं उतर गये और लापता हो गये। कई वर्ष बाद छपरा जिले में उनको पागलों की तरह फुटपाथ पर घूमते देखा गया। फिर उनके गांव के 2 लोग जो कि वहां किसी काम से छपरा गए थे, वे लोग उनको लेकर किसी तरह अपने गांव बसंतपुर पहुंचे। फिर वशिष्ठ नारायण सिंह गांव बसंतपुर लाए गये। तब लालू प्रसाद बिहार के मुख्यमंत्री थे। लालू प्रसाद बसंतपुर आए और डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह से मिले। इलाज का खर्च सरकारी स्तर पर उठाने की घोषणा की। उनके भाई और गांव के दो लोगों को सरकारी नौकरी दी, जो लोग छपरा से उनको आरा लेकर पहुंचे थे। बाद में डॉ सिंह के इलाज की व्यवस्था बेंगलुरु में करायी। लेकिन यह व्यवस्था भी वशिष्ठ नारायण सिंह को पूरी तरह ठीक कर पाने में नाकाम रही। अंत में वे गांव में ही रहने लगे, जहां उनकी मां, भाई अयोध्या सिंह और उनके पुत्र मुकेश सिंह देखरेख करते थे। उनकी सेवा में उन लोगों ने कोई कसर नहीं छोड़ी पूरा परिवार उनकी सेवा में दिन रात लगा रहता था।

तकरीबन 40 साल तक मानसिक बीमारी सिज़ोफ्रेनिया से पीड़ित वशिष्ठ नारायण सिंह पटना के एक अपार्टमेंट में गुमनामी का जीवन बिताते रहे। कभी-कभी कोई संस्था वाले उनको सम्मान के लिए बुलाते और यदा-कदा उनके स्वास्थ्य की स्थिति अखबारों में प्रकाशित होती रहती। उनको नजदीक से जानने वाले बीजेपी के पूर्व एमएलसी हरेन्द्र प्रताप बताते हैं- "इस दौरान भी किताब, कॉपी और एक स्लेट, पेंसिल उनके सबसे अच्छे दोस्त थे।"

पटना में उनके साथ रह रहे भाई अयोध्या सिंह याद करते हैं- "अमेरिका से अपने साथ वे 10 बक्से भरकर किताबें लाए थे, जिन्हें वो पढ़ा करते थे। अक्सर किसी छोटे बच्चे की तरह ही उनके लिए तीन-चार दिन में एक बार कॉपी, पेंसिल लानी पड़ती थी। जिसपर वो कुछ कुछ लिखते, जिसे पठना और समझना मुश्किल था। अक्सर रामायण का पाठ करते रहते थे।"

इन्हीं परिस्थियों में रहते हुए 14 नवंबर, 2019 को पटना के पीएमसीएच में उन्होंने आखिरी सांस ली। सरकार ने राजकीय सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि करायी और केन्द्र की मोदी सरकार ने डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह को मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया।

माँ सरस्वती यह महान ज्ञानी सपूत सदैव के लिए सो गया लेकिन गणित में किये गए योगदान व विद्वता से सदैव गणित के "वशिष्ठ" बनकर अमर रहेंगे।

• नासा के अपोलो स्पेस मिशन के समय अचानक 31 कंप्यूटर कुछ देर के लिए बंद हो गए। मिशन से जुड़े वैज्ञानिक और गणितज्ञों को काठ मार गया। इसी बीच डॉ.वशिष्ठ नारायण सिंह ने पल भर के लिए आंखें बंद कीं और कागज पर कुछ लिखा। जब कंप्यूटर ऑन हुए तो सभी यह देख हतप्रभ थे कि कंप्यूटर और वशिष्ठ बाबू की गणना एक ही थी।

• वशिष्ठ ने नेतरहाट स्कूल की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। हायर सेकेंड्री परीक्षा के टॉपर रहे। उनके लिए पटना विश्वविद्यालय का कानून बदला। सीधे बीएससी ऑनर्स किया। साइंस कॉलेज के तत्कालीन प्रिंसिपल डॉ. नागेंद्र नाथ ने कॉलेज में आए प्रो. केली से वशिष्ठ का परिचय कराया। प्रो. केली की पहल पर वशिष्ठ कैलिफोर्निया पहुंचे।

• अद्भुत मेधा के धनी डॉ वशिष्ठ का दाखिला 8 सितंबर, 1965 को बर्कले यूनिवर्सिटी में हुआ। 1966 में वह नासा में काम करने लगे। 1967 में वह कोलंबिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैथेमेटिक्स के निदेशक बने। तब उम्र सिर्फ 21 साल थी। 1969 में पीएचडी का शोध पत्र दाखिल किया जो सुर्खियों में रहा। बर्कले यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'जीनियसों का जीनियस' कहा था।

• साइंस कॉलेज में प्रो.बीकन भगत गणित के शिक्षक थे। छात्र वशिष्ठ ने सवाल हल करने के उनके तरीके पर सवाल उठाया और खुद कई तरीके से हल कर दिखा दिया। प्रो. भगत ने इसे अशिष्टता माना। शिकायत प्राचार्य प्रो. नागेंद्र नाथ से की। प्राचार्य ने उन्हें तलब किया। गणित के कई सवाल किए। वशिष्ठ ने हर सवाल को कई तरीके से हल कर दिया।

ऐसी जवानी किसी काम की नहीं जो अपनी मातृभूमि के काम न आ सके।

- पं. चंद्रशेखर आजाद

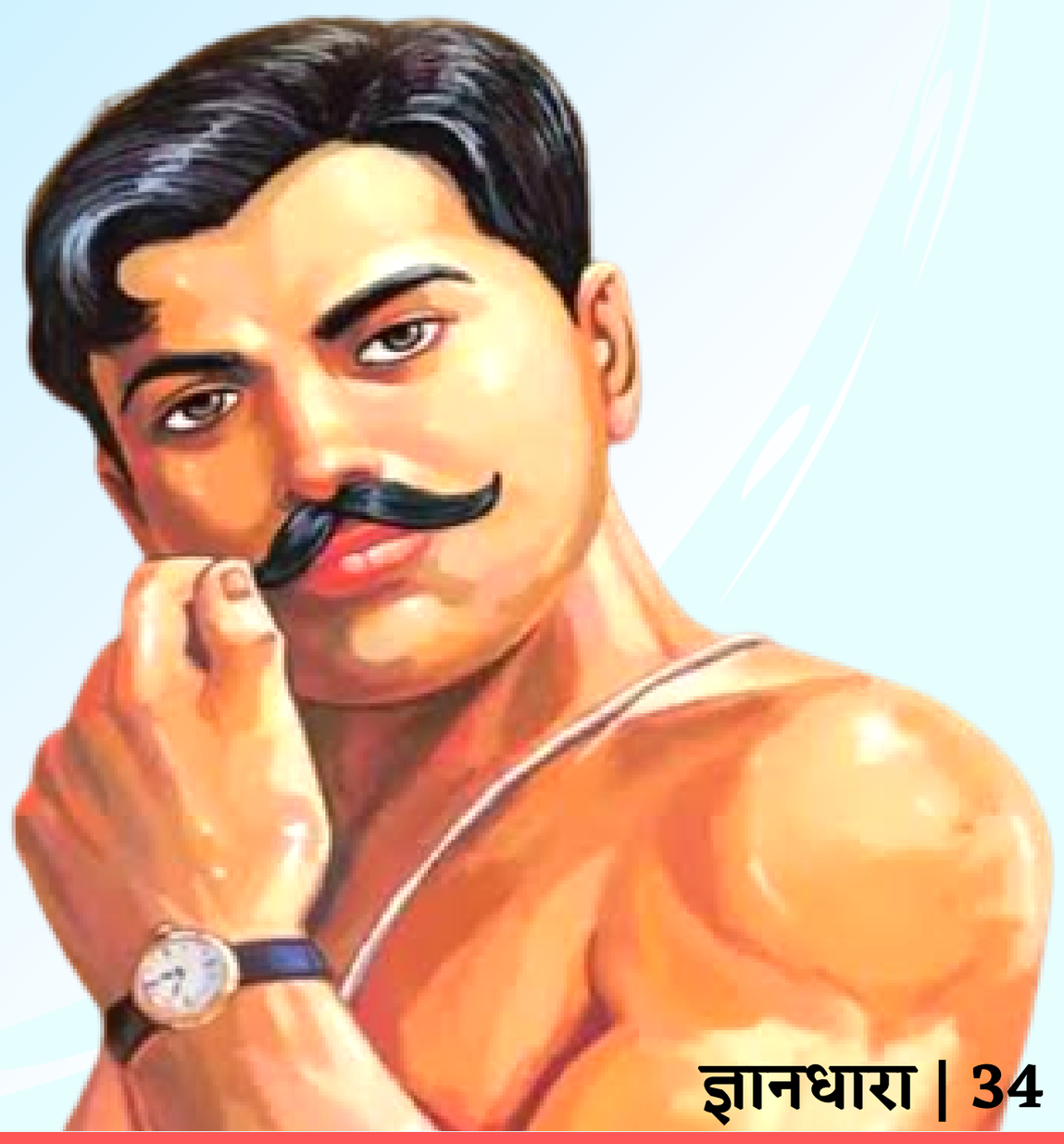

महर्षि दयानंद की गुरुभक्ति

दंडी स्वामी की पाठशाला में शिष्य आते, कुछ समय तक रहते, मगर उनके क्रोध, उनकी प्रताड़ना को सहन न कर सकने के कारण भाग जाते। कोई-कोई शिष्य ऐसा निकलता, जो उनके पास पूरा समय रहकर पूरी शिक्षा पा सकता।दयानंद सरस्वती को भी उनसे कई बार दंड मिला, मगर वह दृढ़ निश्चयी थे अतः पूरी शिक्षा प्राप्त करने का संकल्प किए, डटे रहे।

एक दिन दंडी स्वामी को क्रोध आया और उन्होंने अपने हाथ के सहारे ली हुई छड़ी से दयानंद की खूब पिटाई करते हुए उसकी खूब भर्त्सना कर दी। मूर्ख, नालायक, धूर्त... पता नहीं क्या-क्या कह कहते चले गए।

दयानंद के हाथ में चोट लग गई, काफी दर्द हो रहा था, मगर दयानंद ने बिलकुल भी बुरा नहीं माना बल्कि उठकर गुरुजी के हाथ को अपने हाथ में ले लिया और सहलाते हुए बोले- 'आपके कोमल हाथों को कष्ट हुआ होगा। इसके लिए मुझे खेद है।' दंडी स्वामी ने दयानंद का हाथ झटकते हुए कहा- 'पहले तो मूर्खता करता है, फिर चमचागिरी। यह मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं।'पाठशाला के सब विद्यार्थियों ने यह दृश्य देखा। उनमें एक नयनसुख था, जो गुरुजी का सबसे चहेता विद्यार्थी था। नयनसुख को दयानंद से सहानुभूति हो आई, वह उठा और गुरुजी के पास गया तथा बड़े ही संयम से बोला- 'गुरुजी! यह तो आप भी जानते हैं कि दयानंद मेधावी छात्र है, परिश्रम भी बहुत करता है।'

दंडी स्वामी को अपनी गलती का अहसास हो चुका था। अब उन्होंने दयानंद को अपने करीब बुलाया। उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले- 'भविष्य में हम तुम्हारा पूरा ध्यान रखेंगे और तुम्हें पूरा सम्मान देंगे।'

जैसे ही छुट्टी हुई, दयानंद ने नयनसुख के पास जाकर कहा- 'मेरी सिफारिश करके तुमने अच्छा नहीं किया, गुरुजी तो हमारे हितैषी हैं। दंड देते हैं तो हमारी भलाई के लिए ही। हम कहीं बिगड़ न जाएं, उनको यही चिंता रहती है।'

यह दयानंद आगे चलकर महर्षि दयानंद बन कर विश्वविख्यात हुए व स्वराज्य के उद्घोषक और सनातन हिन्दू धर्म के प्रवर्तक बने।

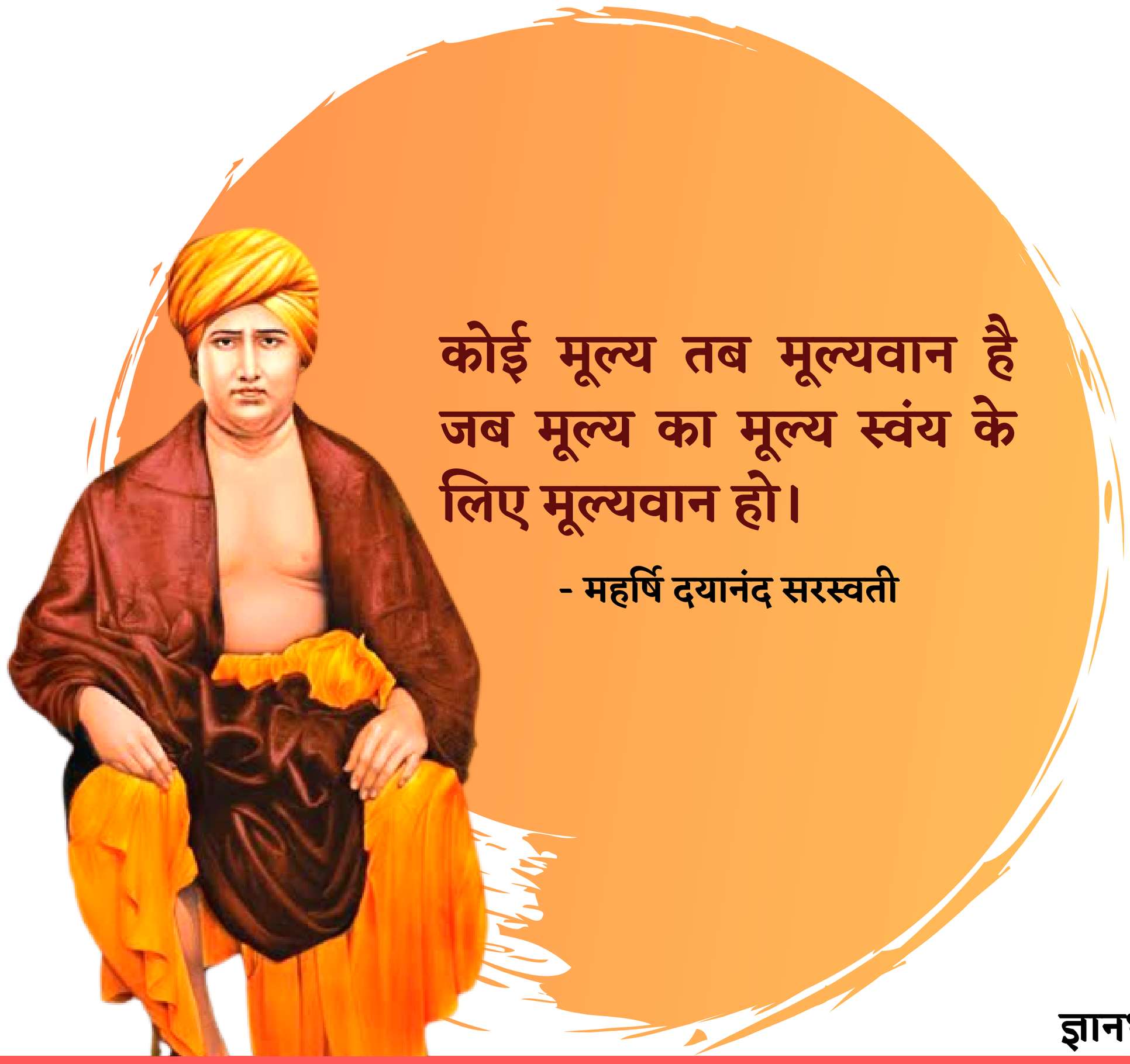

राष्ट्रीय वीणा

• माखनलाल चतुर्वेदी

यह गुंजार कहाँ से आयी
चौंक पड़ा, मैं बोल उठा,
कँपने लगा हृदय, हरि जाने
मैं भय-विह्वल डोल उठा!

'फिर कुछ बजा',
सोच कर मन में
फिर मैं कुछ-कुछ जान गया;
'वीणा की झंकार हुई है', यही
बात अनुमान गया!

'निष्ठुर बड़ा बजानेवाला'
यों कह दौड़ा ध्वनि की ओर,
किंतु मध्य में रुका, सुना—
जब पकड़ो-मारो का कुछ शोर;

ज्यों-त्यों लड़ता-भिड़ता पहुँचा
मैं प्यारी वीणा के पास,
किंतु मातु को पा उदास
मन सूख गया, हो गया निराश;

झंझावात भयानक ही से
बजते थे वे सारे तार,
मची हुई थी समय राज की
उन तारों पर मारामार;

हाँ अवश्य अकुलाते थे वे
निकल रही थी गहरी आह,
मै भी बना वहाँ पर जाकर
उस प्यारी वीणा का तार;

कसे हुए पीटे जाते हैं
भारी शोर मचाते हैं,
हा! हा!! हमें पीटनेवाले
ज़रा नहीं सकुचाते हैं;

पर हैं सबल, डरेंगे क्योंकर,
है शरीर का दान किया।
इस प्रकार माँ की वीणा का
दृढ़ होकर सम्मान किया।

मुझ पर पड़ी मार, कुछ कँपकर,
मैंने ऐसी की गुंजार—
कैसे मौन बैठता? कब तक?
पड़ने लगी मार पर मार!

अजी न था उपदेश, न था—
आदेश, न था उद्देश विधान
थी वह केवल पिटनेवाले
तारों के प्राणों की तान!

क्या? 'राष्ट्रीय मधुर वीणा में,
टूटा-फूटा तार न हो,
काँपे, हिले, खिंचे, झुक जाए,
किसी भाँति इंकार न हो।'

विश्व देव! सब गूँज उठे
क्या अब भी बल संचार न हो?
पड़े 'तार पर मार' कहो क्या—
वीणा से झंकार न हो?

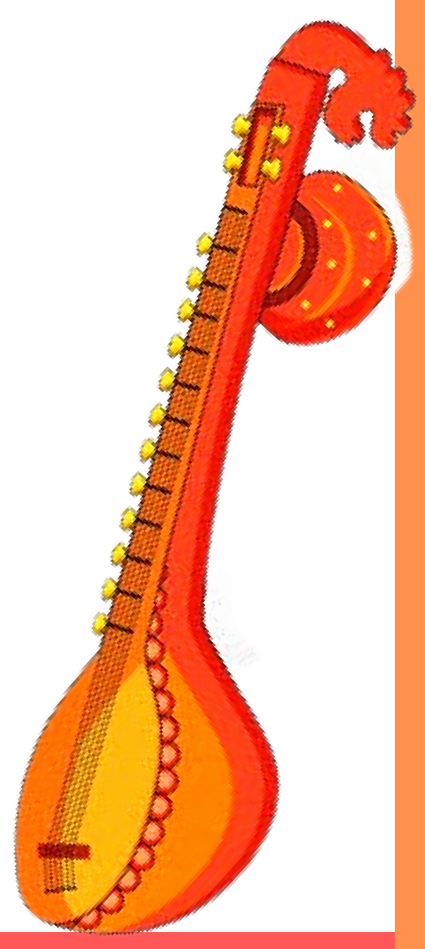

हिंदी प्रश्नोत्तरी

आप कितना जानते हैं?

हिंदी पर आधारित कुछ प्रश्न नीचे दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, सोचिए व दीजिए सही उत्तर और देखिए कि हिंदी के बारे में आप कितना जानते हैं-

1. हिंदी के पहले समाचार-पत्र का नाम क्या था?

(क) उदंत मार्तंड
(ख) वंदे मातरम

2. हिंदी की लिपि इनमें से कौन-सी है?

(क) गुरुमुखी
(ख) देवनागरी लिपि

3. हिंदी दिवस किस दिन मनाया जाता है?

(क) 15 सितंबर
(ख) 14 सितंबर

4. इनमें से किस देश में ज्यादा हिंदी बोली तथा लिखी जाती है?

(क) मॉरीशस
(ख) ईरान

5. 'ईदगाह', 'पंच-परमेश्वर' और 'बूढ़ी काकी' ये किस प्रसिद्ध भारतीय साहित्यकार की रचनाएं हैं?

(क) मुंशी प्रेमचंद
(ख) जयशंकर प्रसाद

6. 'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं' ये काव्य पंक्तियां किसने लिखी हैं?

(क) माखनलाल चतुर्वेदी
(ख) सुमित्रानंदन पंत

7. 'नवनीत' शब्द का सही अर्थ इनमें से क्या है?

(क) घी
(ख) मक्खन

8. 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' यह प्रसिद्ध कविता किसकी है?

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान
(ख) फणीश्वरनाथ रेणु

SCAN ME

मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन संतति के लिए नए उत्साह और ओज के साथ काम करने के लिए शीघ्र ही फिर लौट आयेगी.

- पं. रामप्रसाद बिस्मिल

कला कुंज

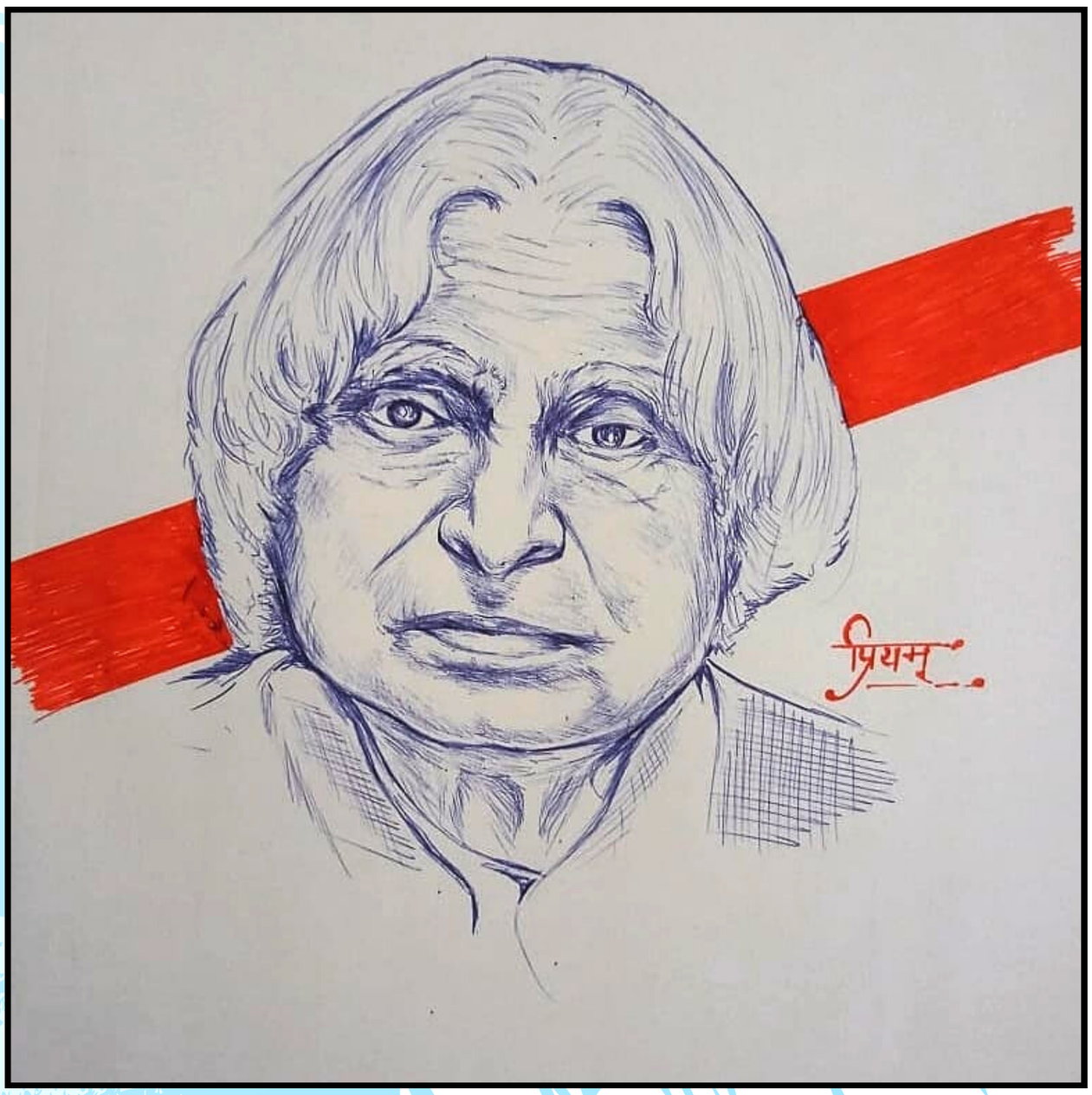

प्रियम मिश्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

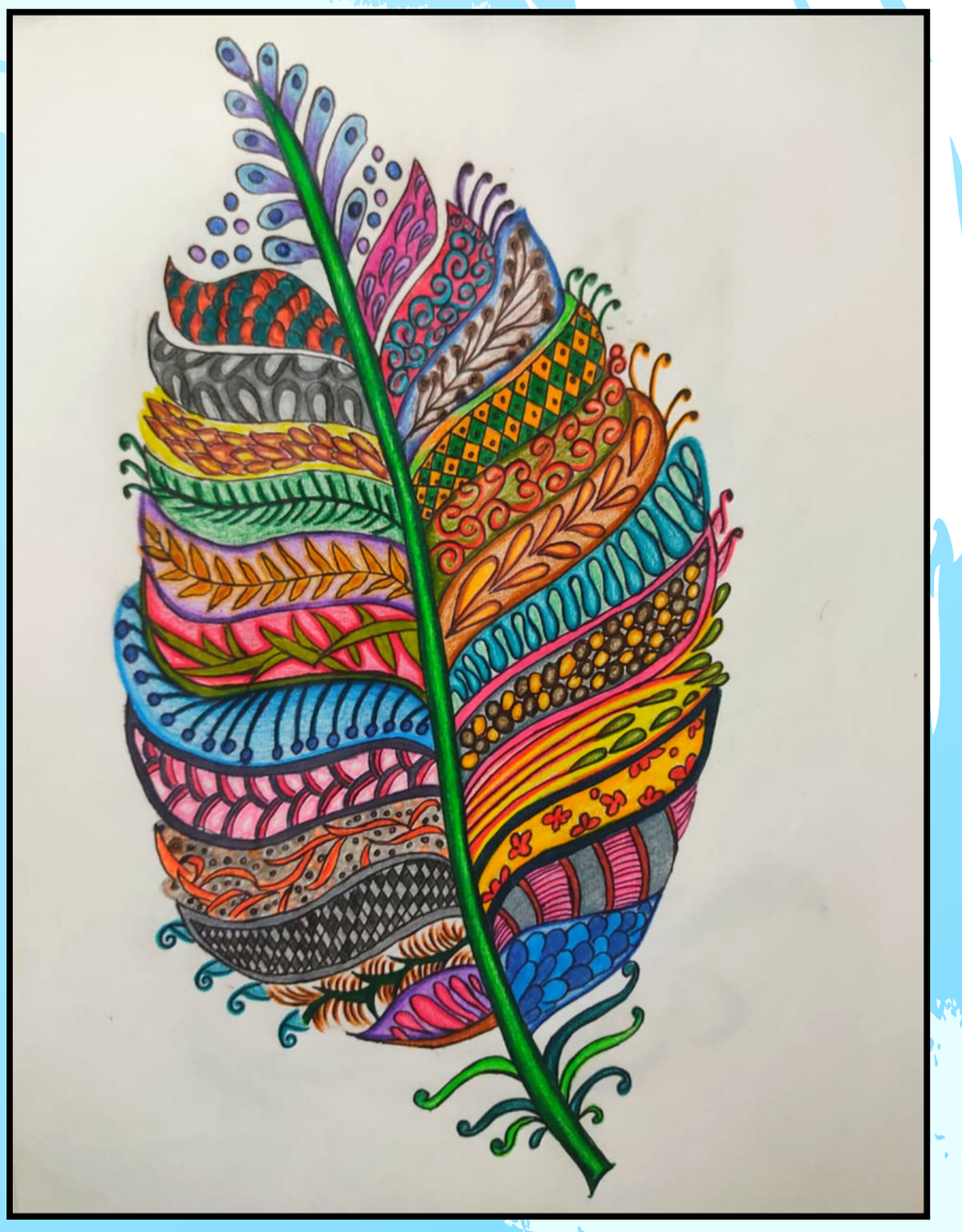

कृति
सत्यम फैशन इंस्टिट्यूट, नोएडा

खुद के साथ एक जंग करते हैं

- मोहित कुमार चौधरी

चलो ज़िन्दगी में रंग भरते हैं, खुद के साथ एक जंग करते हैं
सभी शूलों को भुलाकर, हाथ में त्रिशूल उठाकर
बीते हुए से अलग हटकर, आने वाले को बगल रखकर
कुछ ऐसा प्रचंड करते हैं, खुद के साथ एक जंग करते है।
मोह से अलग होकर, काटों पे नंगे पाओं चलकर

पसीने से लहू बहाकर, अपनी गलतियों को न दोहरा कर
फिर एक बार घमंड करते हैं, खुद के साथ एक जंग करते है।
हार को स्वीकार कर, खुद और अपनों को माफ़ कर
चुनौतियों से जीतकर, अपनों से हारकर

अहंकार को भंग करते हैं, खुद के साथ एक जंग करते है।
राम सी शालीनता दिखाकर, हनुमान सी गदा उठाकर
कृष्णा सी रणनीति लाकर, अर्जुन सी तीर चलाकर
हम खुद से आज प्रण करते हैं, खुद के साथ जंग एक करते है।

मैं कब जीना भूल गया

- अतुल शर्मा

जीवन की इस दौड़ में
न जाने में कब जीना भूल गया
न जाने मैं कब जीना भूल गया

बच्चों को नाना नानी से मिलाओ
बीवी को भाई बहन से मिलाओं
माँ-बाप को रिश्तेदारों से मिलाओ
मुझको किससे मिलना है
न जाने, मैं कब मिलना भूल गया
जीवन की इस दौड़ में
न जाने, मैं कब जीना भूल गया
न जाने, मैं कब जीना भूल गया

बच्चों को किताबें दिलाओ
बीवी को गहने दिलाओ
माँ-बाप को दवाई दिलाओ
मुझको क्या चाहिए
न जाने, मैं कब लाना भूल गया
जीवन की इस दौड़ में
न जाने, मैं कब जीना भूल गया
न जाने, मैं कब जीना भूल गया

पहले बेटा बना
फिर भाई बना
और फिर पिता बना
फिर पति बना
मुझको क्या बनना था
ना जाने मैं कब बनना भूल गया
जीवन की इस दौड़ में
न जाने, मैं कब जीना भूल गया
न जाने, मैं कब जीना भूल गया

सबको हँसाते-हँसाते
खुद रोना भूल गया
रिश्तों की डोर थामें
मैं कितनी दूर निकल गया
ना जाने, मैं कब जाना भूल गया
जीवन की इस दौड़ में
मुझको कहाँ जाना था
ना जाने, मैं कब जीना भूल गया
ना जाने, मैं कब जीना भूल गया

आओ फिर से दिया जलाएँ
भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें-
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्त्तमान के मोहजाल में-
आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने-
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

- अटल बिहारी वाजपेयी

धन्यवाद!!

सर्वप्रथम ज्ञानदाता श्री गणेश व माँ शारदे को प्रणाम,श्री माँ वैष्णो देवी के चरणों मे हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा ज्ञानधारा रूपी पुष्प को हम अर्पित कर रहे हैं।पत्रिका का यह अंक स्वतंत्रता के महानायक, वीर नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी की 125 वीं जयंती पर उन्हें समर्पित है।नेताजी का ज्ञान,विद्वता,दूरदर्शिता,नेतृत्व,लेखन शैली व राष्ट्रप्रेम अद्भुत था।स्वामी विवेकानंद से प्रेरित उनका महान जीवन प्रत्येक युवा व भारतवासी के लिए प्रकाशपुंज है।ऐसे महायोद्धा युगों में राष्ट्र कल्याण के लिए अवतरित होते हैं।नेताजी का जीवन महान उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता व स्वतंत्रता के बाद भारत का भविष्य को समर्पित था।नेताजी की मृत्यु आज भी भारतीयों के लिए रहस्य बनी है,संभव हो कि भविष्य में इस रहस्य से पर्दा उठे व सत्य रूपी भानु का प्रकाश प्रकाशित हो।

इस पत्रिका में साथ ही श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय की भविष्यद्रष्टा सोच,महापुरुषों के तेजस्वी वाक्य,जीवनोपयोगी कथाएं, युवाओं के लेख/कविता व कला भी समाहित की गयी है।ज्ञानधारा पत्रिका इस अंक के रूप में माँ वैष्णवी के आशीर्वाद व गुरुजनों के मार्गदर्शन से ज्ञान की ज्योति को लेकर युग निर्माण की राह प्रशस्त कर रही है व करती रहेगी।

पत्रिका का पाठन कर आनंद का अनुभव करें।

शुभकामनाओं सहित!!

- मिलिन्द शुक्ल

----शब्दावली----

प्रशासनिक

तदर्थ	Ad hoc
संवर्ग	Cadre
कुलाधिपति	Chancellor
प्रतिनियुक्ति	Deputation
निदेशक	Director
सर्वेक्षक	Surveyor
पर्यवेक्षक	Supervisor
राज्यपाल	Governor
सचिव	Secretary
कुलपति	Vice Chancellor
अर्हता	Eligibility
पृष्ठांकन	Endorsement
अनुदान	Grant
अंतरिम	Interim
ज्ञापन	Memorandum
अधिसूचना	Notification
कुलसचिव	Registrar
प्रशासन	Administration
आयोग	Commission
नियोक्ता	Employer

मानविकी

जनसंख्या	Population
जनगणना	Census
संविधान	Constitution
प्रजातंत्र	Democracy
पत्रकारिता	Journalism
त्रासदी	Tragedy
कामडी	Comedy
अधिकार	Right
आरक्षण	Reservation

वाणिज्यिक

लेखापाल	Accountant
अभिकर्ता	Agent
प्रबंधक	Manager
पूँजी	Capital
रोकड़िया	Cashier
अनुबंध	Contract
ऋणी	Debtor
प्रत्याभूति	Guarantee
आय	Income
कर	Tax
निविदा	Tender
व्यापार	Trader
उत्पादन	Production
लाभ	Profit
खाता	Ledger
निवेश	Investment
गणक	Calculator
संगणक	Computer
खजांची	Treasurer
नीलाम	Auction

“

यही एक यूनिवर्सिटी अपवाद है, जिसमें बाकी सब होने के उपरांत माता वैष्णो देवी के चरणों में हैं।

- श्री नरेंद्र मोदी जी

(श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के मा० प्रधानमंत्री जी के वक्तव्य के अंश)

”

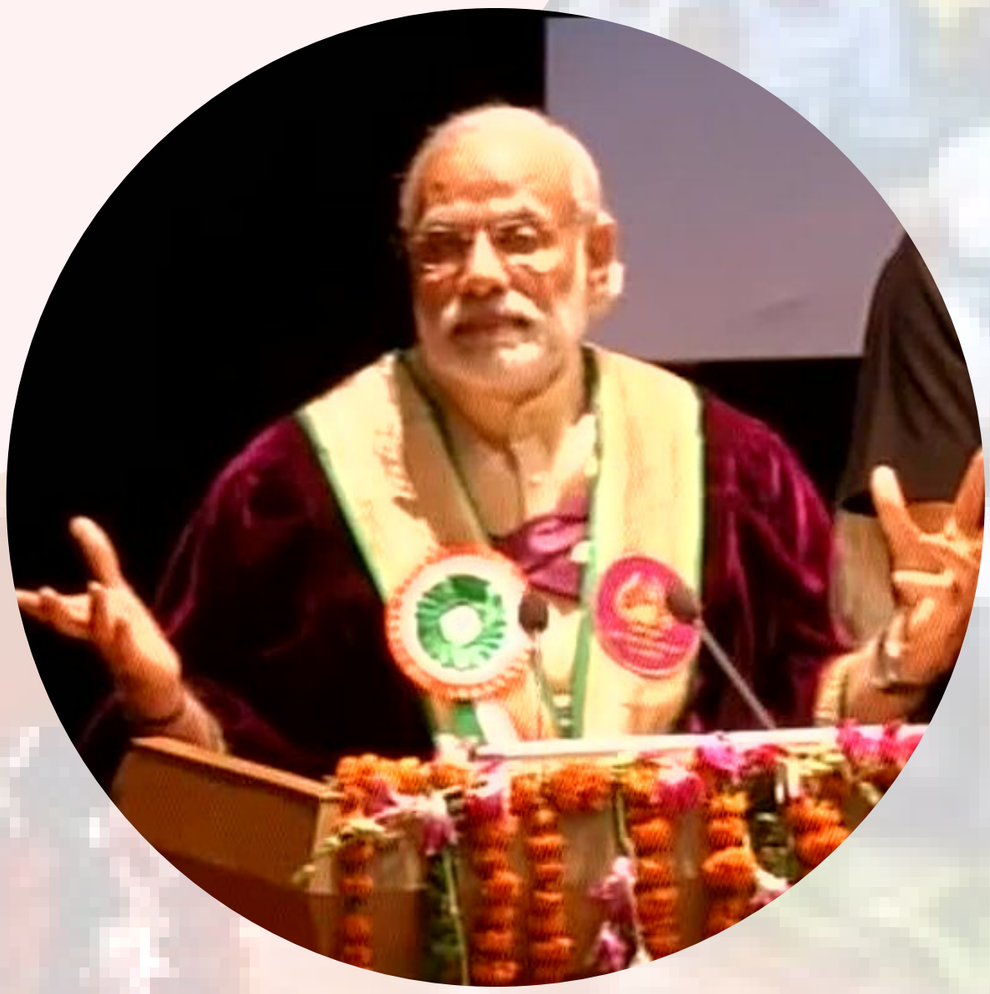

हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा हिंदी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

विज्ञानं ब्रह्म

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

[विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अधिनियम 1956 की धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के तहत]

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय (एसएमवीडीयू) की स्थापना जम्मू और कश्मीर श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय अधिनियम 1999 के तहत की गई है। यह पूरी तरह से आवासीय विश्वविद्यालय है। इसका उद्घाटन 19 अगस्त 2004 को भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के करकमलों से हुआ। डॉ० कलाम ने विश्वविद्यालय के छात्रों को पहला व्याख्यान भी दिया। इस विश्वविद्यालय में अभियांत्रिकी, विज्ञान, प्रबंधन, परिचर्या और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय हैं। इसके 15 विभागों में बी.टेक., बी.आर्क., एम.टेक., बी.एससी., एम.एससी., बी.ए., एमए और पीएच.डी. स्तर पर पढ़ाई होती है।

----आधारभूत मूल्य----

- शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व
- प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का सम्मान और सहिष्णुता
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता वाले विषयों पर ध्यान देना
- बौद्धिक उत्कृष्टता और रचनात्मकता की सराहना
- वैज्ञानिक अन्वेषण की निरंतरता

परिसर कार्यालय:

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
उपडाकघर, कटड़ा
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
ईमेल: info@smvdu.ac.in
फैक्स: 01991-285694

जनसंपर्क कार्यालय:

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
सरस्वती धाम,रेल प्रमुख परिसर,जम्मू
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
संपर्क नंबर: 9622885588
फोन/फैक्स: 0191-2470067

विज्ञानं ब्रह्म

विश्वविद्यालय का दर्शन (Vision) एवं उद्देश्य (Mission) तथा गुणवत्ता नीति (Quality Policy)

दृष्टि

राष्ट्रीय अखंडता और मानवीय मूल्यों की पवित्रता का संरक्षण करते हुए भारतीय समाज और सम्पूर्ण विश्व की सेवा के लिए प्रतिभाशाली युवाओं के विकास एवं संपोषण हेतु एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना

उद्देश्य

उत्कृष्टता के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के साथ समाजोपयोगी शिक्षा, विद्वत्ता एवं अनुसंधान को बढ़ावा देना

गुणवत्ता नीति

पूर्ण सहभागिता एवं पारदर्शी व्यवस्था द्वारा उत्तम शैक्षणिक वातावरण का सदुपयोग कर लोगों में निष्ठा, दक्षता और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण बौद्धिक और वैयक्तिक क्षमता का अनवरत विकास

smvdu.ac.in

हिन्दी प्रकोष्ठ
श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
कटड़ा,जम्मू एवं कश्मीर,भारत-182320

----हिन्दी प्रकोष्ठ----

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रकोष्ठ की स्थापना का निर्णय यूजीसी के निर्देशों के अनुपालन में विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद् द्वारा इसकी 24वीं बैठक में 23.11.2015 को लिया गया। इसके क्रियान्वयन की अधिसूचना 15.02.2016 को निर्गत की गयी। इसके क्रियान्वयन के लिए समन्वयक/नोडल अधिकारी को नियुक्त किया गया साथ ही छात्र सचिव के पद का भी सृजन किया गया। हिन्दी प्रकोष्ठ के निम्नलिखित उद्देश्य और दायित्व निर्धारित किए गए:

1. कार्यालय और विद्यार्थियों से संबन्धित सूचनाओं को हिन्दी माध्यम से करने को बढ़ावा देना,
2. विद्यार्थियों को हिंदी में सीखने और बातचीत करने के लिए तथा राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद/भाषण, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना,
3. पुस्तकालय में सामान्य अभिरुचि पठन अनुभाग के लिए महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हिंदी पुस्तकें/साहित्य और हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना और सदस्यता लेना,
4. समाचार पत्र, छात्र पत्रिका आदि जैसे संस्थागत प्रकाशनों में हिंदी लेखों का प्रकाशन,
5. हिन्दी में संगोष्ठी/वाद-विवाद/लोकप्रिय व्याख्यान आदि आयोजित करना,
6. हिंदी में अनुवाद, ऑनलाइन सामग्री का निर्माण आदि को प्रोत्साहित करें, नाटक, नुक्कड़ नाटक, एकांकी आदि जैसे थिएटर कार्यक्रमों का आयोजन करना,
7. चर्चा करें और गतिविधियों का एक कैलेंडर तैयार करें और पुरस्कारों का प्रस्ताव भी देना,
8. हिंदी के प्रचार के लिए किसी अन्य स्वीकृत गतिविधि का क्रियान्वयन करना।

अपनी रचनाएं भेजें: hindi.cell@smvdu.ac.in

www.hindicell.smvdu.ac.in